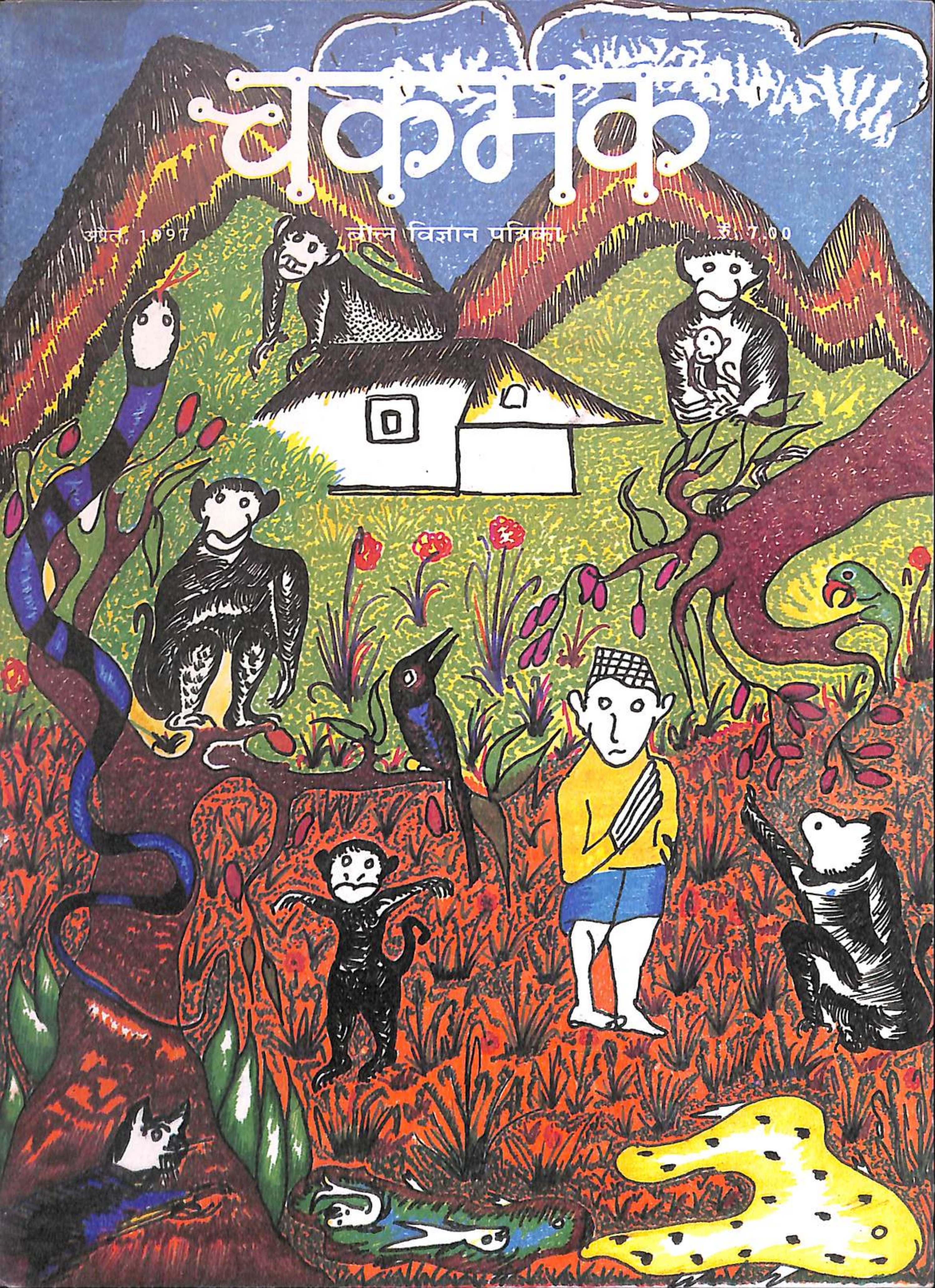
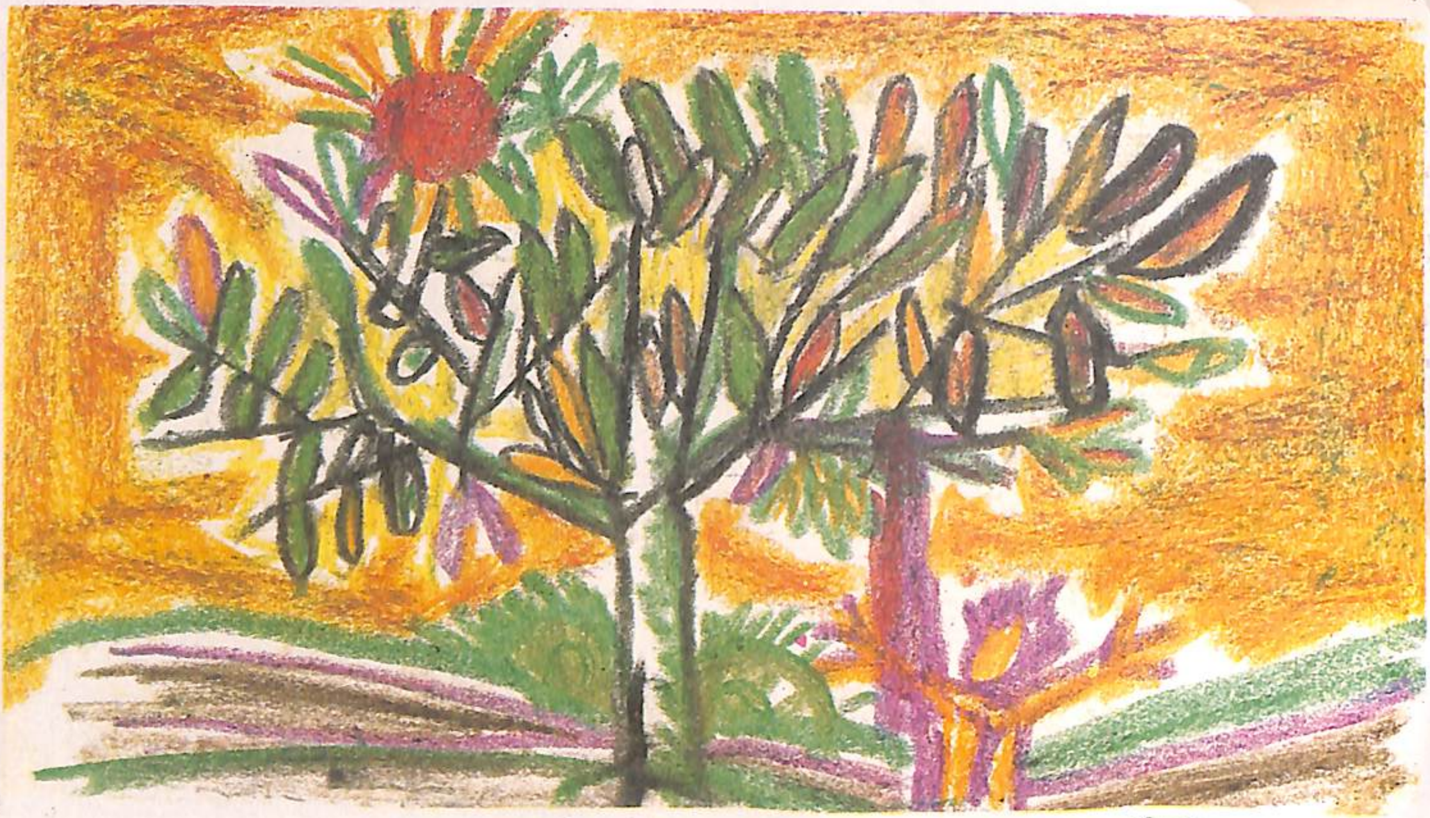
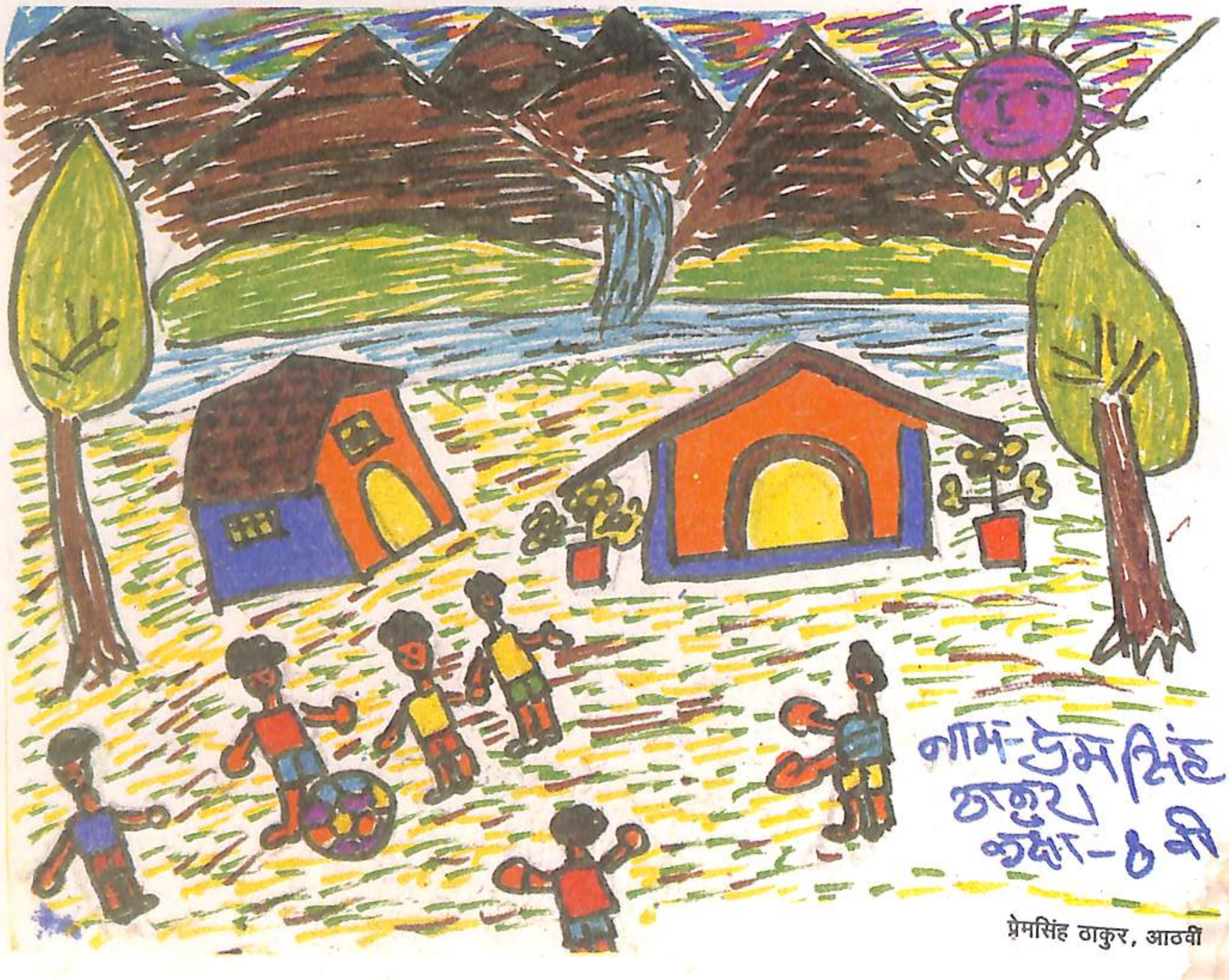
चकमक

अप्रैल, 1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 7.00





सुनयना सिंह, लखनऊ, उ.प्र.



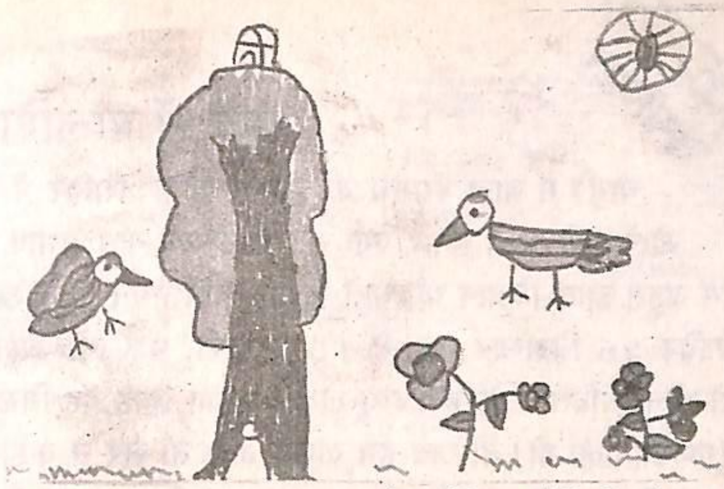
प्रेमसिंह ठाकुर, आठवीं

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 12 अंक-10 अप्रैल 1997
सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी
वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

चकमक का चंदा
एक प्रति : सात रुपए
छमाही : 40.00 रुपए
वार्षिक : 75.00 रुपए
दो साल : 140.00 रुपए
तीन साल : 200.00 रुपए
आजीवन : 750.00 रुपए
साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।
आजीवन : 1000.00 रुपए
साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।
सभी में डाक खर्च हमारा
चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रु. अतिरिक्त जोड़ें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म.प्र.)
फोन : 563380



सोनल डेनियल, चौथी, भिलाई, म.प्र.

140 वें अंक में ....

विशेष

कहानी

कविताएँ

धारावाहिक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण : हूताराम अधिकारी

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पौढ़ी में बालशिविर

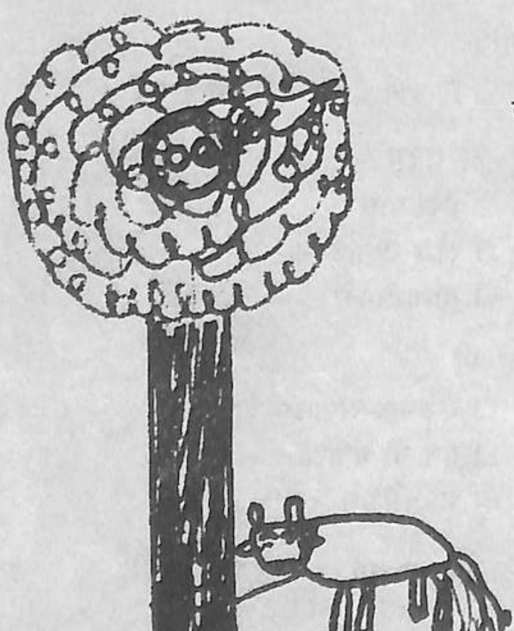
पौढ़ी में बाल रंगमंच का शिविर लगा। शिविर में हम सब तैंतीस बच्चे थे। हम वहाँ बहुत खेले कूदे। वहाँ हमारे एक सर थे,उनका नाम सुभाष रावत है। वे उत्तरकाशी में रहते हैं उन्होंने हमें बहुत ज्ञान-विज्ञान की बातें बताईं। वहाँ हमने खेल-खेल में बहुत सी मजेदार बातें सीखीं। वह शिविर 26 दिसम्बर,96 से 10 जनवरी, 97 तक था। एक दिन हमारे सर ने कहा कि किन्हीं दो-तीन व्यक्तियों के इन्टरव्यू लेकर आओ, चाहे वह भिखारी हो, चाहे वह दुकानदार हो, चाहे वह मूँगफलीवाला हो। तो जब हम वापस आए तो सर ने कहा जैसे तुमने इन्टरव्यू लिए वैसे ही करके दिखाओ। सर ने हमें पाँच मिनट का समय दिया। इसमें मैं बुढ़िया बनी थी। फिर हम पिकनिक भी गए। हम शिविर में एक गोल घेरे में बैठते थे क्योंकि हम सब एक समान थे। कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। अब हमें बताया गया कि पौढ़ी के प्रेक्षागृह में दो नाटक होंगे - ''नन्हा नकलची'' और ''मुकुटधारी''। नन्हा नकलची सितम्बर, 96 की चकमक में भी दिया गया है। इसके लेखक मिशियो कातोह हैं। मुकुटधारी नाटक पौढ़ी की पानी की समस्या पर आधारित है। यह दोनों नाटक हमनें 11 जनवरी को खेले जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया।

रैमासी रावत, छठवीं, पौढ़ी गढ़वाल, उ. प्र.

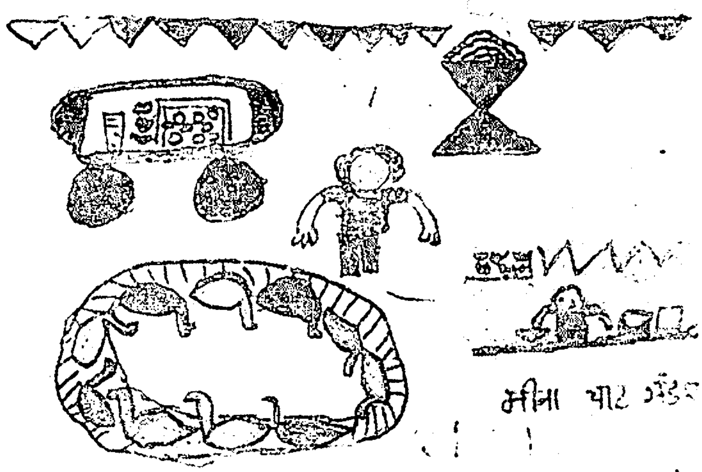
अपनी बात

यह रहा चकमक का एक और नया अंक। हम 'चकमक समाचार' नाम से विभिन्न जगहों पर हो रही बच्चों से जुड़ी यानी तुम लोगों से सम्बंधित गतिविधियों के बारे में जानकारी देते रहे हैं। जैसे बाल रंगमंच के शिविर, बाल मेला आदि। इस तरह की जानकारियाँ हमें हमारे पाठकों से ही मिलती हैं। इस बार हमें रैमासी ने पौढ़ी गढ़वाल, उ. प्र. से वहाँ हुए एक शिविर की रिपोर्ट भेजी है। इसे तुम भी पढ़ो और साथ ही एक बात यह कि तुम्हारे आसपास जब कोई इस तरह की गतिविधि हो रही हो और तुम उसमें भाग लेने पहुँच जाओ तो उसके बारे में हमें भी लिखना। तुम्हारे अनुभव और विचार हम भी पढ़ना चाहेंगे। अगर रिपोर्ट बढ़िया तरीक़े से लिखी गई तो 'चकमक समाचार' में चकमक के और पाठक भी पढ़ेंगे। तभी तो चकमक के सारे पाठक एक-दूसरे के बारे में, एक-दूसरे की गतिविधियों के बारे में जानते-समझते रहेंगे। तुम सब आपस में सिर्फ़ अपनी रचनाएँ ही नहीं, अपने आसपास की हलचलों को भी बाँट पाओगे।

चकमक



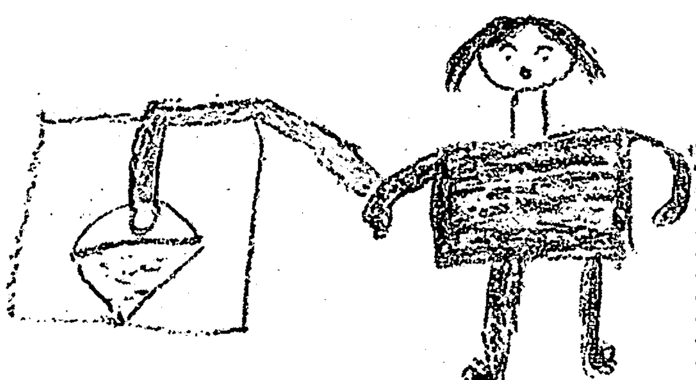
सुरभि, आठवीं, किशनगढ़, राजस्थान



उदिता पटेल, दूसरी



प्रीति कुमारी, आठवीं, लूनेरा, रतलाम, म. प्र.



लुभावना पुरोहित, छठवीं

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन [| | | | |]

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दर 1 अप्रैल 97 से

छह माह	:	40.00 रुपए
एक साल	:	75.00 रुपए
दो साल	:	140.00 रुपए
तीन साल	:	200.00 रुपए
आजीवन	:	750.00 रुपए *
आजीवन	:	1000.00 रुपए ०

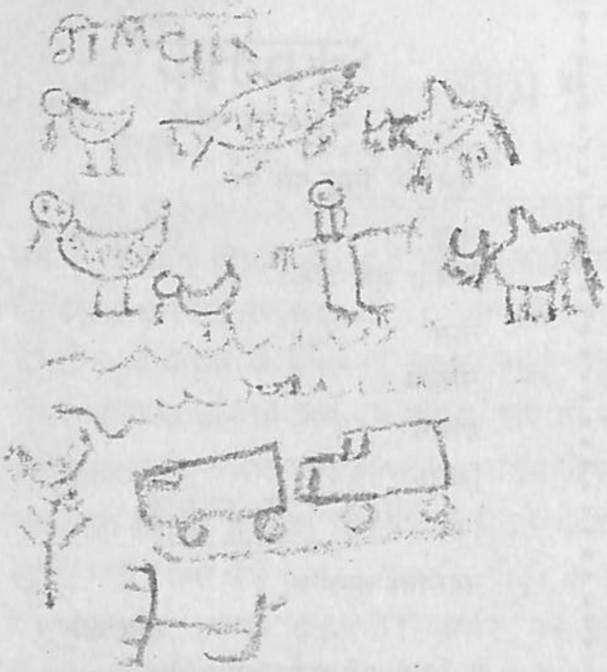
* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

० इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

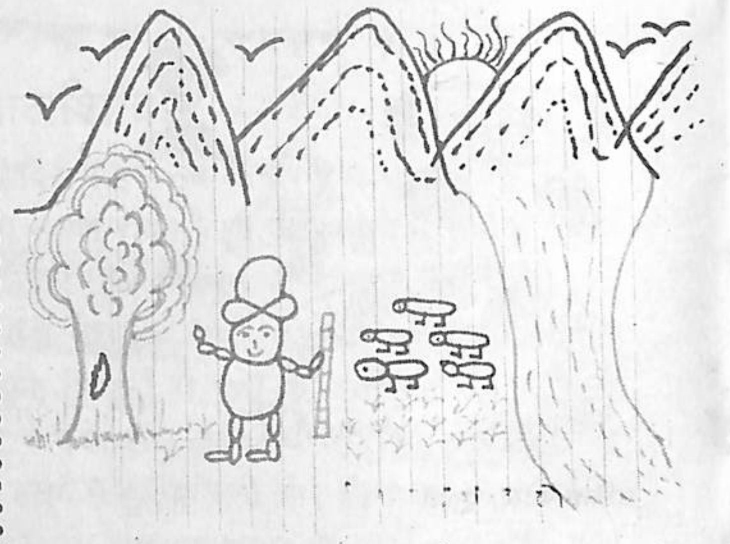
सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

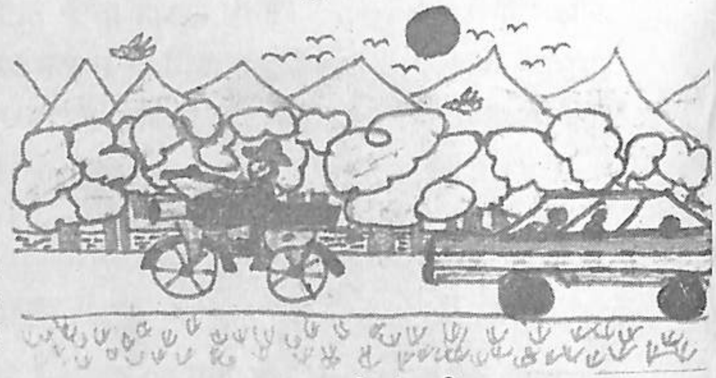
भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।



गिलदार, रेवा जीवन शाला, आंजनवाड़ा, झाबुआ, म.प्र.



आकाश भारद्वाज, रामपुरा, मन्दसौर, म. प्र.



आशीष कुमार साहू, आठवीं, देवरबीजा, दुर्ग, म. प्र.



भारती रथ, दूसरी, दुलारपाली, रायपुर, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन [| | | | |]

....

....



गाजर और खरगोश

गाजर की नज़र मुझसे मिली
मेरी नज़र गाजर से मिली
पापा से बोलकर, किलो भर तौलकर
ले आया गाजर को, झोले में मोलकर
मम्मी से बोलकर हलुआ बनवाकर
जी भरकर खाया
खरगोश को ललचाकर, पास में बुलाया
फिर प्यार से सहलाकर
गाजर का हलुआ खिलाया
पर खरगोश को हलुए से ज़्यादा
कच्चा ही खाने में मज़ा आया
फिर शर्ट, पेंट, चश्मा और मोजे पहनाकर
गले में ख़ूब बढ़िया टाई लगाकर
गाड़ी में अपनी गोद में बिठाकर
ले आया खरगोश को जंगल घुमाकर

अशेष कुन्तल चन्द्राकर, दूसरी, दुर्ग, म. प्र.



मनु पांडे, अल्मोड़ा, उ. प्र.

नानी की परेशानी

मेरी नानी बहुत अच्छी थीं। वो मुझे बहुत प्यार करती थीं। मैं जब उनके पास जाता तो वो मुझे मिठाई देती थीं। एक बार उनके बक्से का ताला किसी से नहीं खुला। मैं जब घर गया तब मैंने देखा कि नानी परेशान थीं। मैंने उनकी परेशानी हल कर दी मेरे हाथ लगाते ही ताला खुल गया और नानी खुश हो गईं। लेकिन मुझे अब मेरी नानी की बहुत याद आती है। क्योंकि वो अब इस दुनिया में नहीं हैं।

मनोज कुमार, आठवीं,
पालम कालोनी, नई दिल्ली

मेरा पन्ना

जामुन

एक बार मैं और मेरा दोस्त जामुन खाने गए। वहाँ से जामुन का वृक्ष अधिक दूर था। मैं और मेरा दोस्त चलते ही चले गए। फिर हमें जामुन का वृक्ष दिखाई दिया तो हम दौड़कर वहाँ पहुँच गए। मेरा दोस्त और मैं जामुन के पेड़ पर चढ़ गए। संजय की ढगना (डंगाल) पर अधिक जामुन थे और मेरी ढगना पर कम थे। तो मैंने उससे जामुन माँगे। तो उसने जामुन तोड़कर एक हाथ वार (से) ढगना पकड़ी और एक हाथ वार देने गया तो गिर पड़ा।

मुकेश सिंह गहलोद, सातवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

खरगोश

छोटा खरगोश बड़ा सयाना
लगता है भई सबको प्यारा
गाजर उसको अच्छी लगती
बिल्ली मौसी गन्दी लगती
बहुत तेज़ दौड़ता है वह
नई ताज़गी दिखलाता है
छोटे से बिल में छिपकर
अपनी आँखें मटकाता है
भेड़िए उसके पीछे लगते
लेकिन पकड़ न पाते
टुमक-टुमककर चलता है
टाटा करके जाता है

श्याम, बंटी, लालबाग, गुजरात

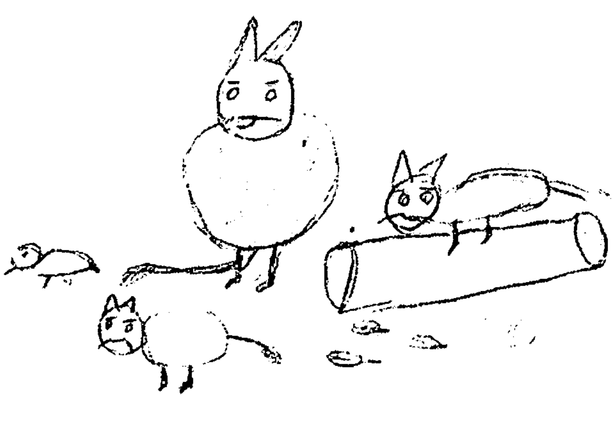


ईरा अंजली अनवर, चार वर्ष, भोपाल, म. प्र.

पूसी बिल्ली

पूसी मैं कहलाती हूँ
गुपचुप गुपचुप आती हूँ
दूध मलाई खाती हूँ
पूँछ हिलाती जाती हूँ
चूहों को डरवाती हूँ
उनको दूर भगाती हूँ
तुम मुझको भाती हो
मीठा दूध पिलाती हो

अंकित गौड़, तीसरी, शिवपुरी, म. प्र.



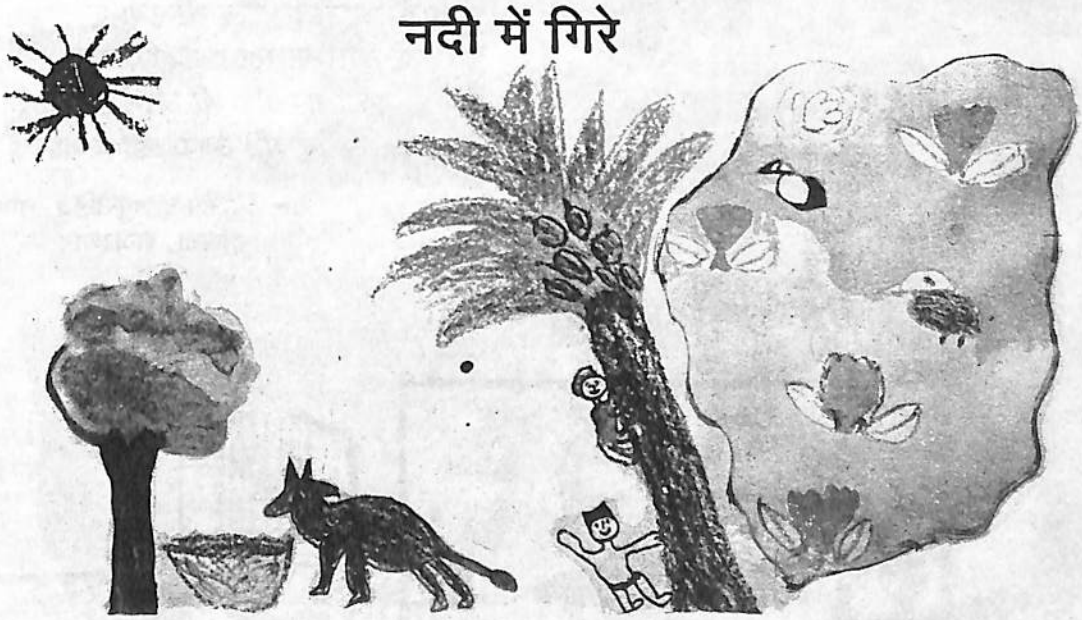
अनीता फिलोमिना, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

अख़बार

रोज़ सुबह आता अख़बार
समाचार लाता अख़बार
दूर दूर की दुनिया भर की
ख़बरें पहुँचाता अख़बार
आसपास की घटनाओं से
परिचय करवाता अख़बार
बड़े-बड़े नेताओं की भी
बातें बतलाता अख़बार
देश विदेश समाज सभी की
गाथाएँ गाता अख़बार
किस्सा कथा कहानी सबसे
है रखता नाता अख़बार
बालक वृद्ध युवक सबको ही
बहुत अधिक भाता अख़बार
पढ़ने की बेचैनी सबमें
प्रात उपजाता अख़बार
नाम कमाओ तुम भी जग में
यह ही सिखलाता अख़बार
ग्राम-ग्राम की नगर-नगर की
झाँकी दिखलाता अख़बार
लोकतंत्र में सबसे ज़्यादा
है आदर पाता अख़बार

रामेन्द्र सिंह रघुवंशी, दसवीं, पाचामा, रायसेन, म. प्र.

नदी में गिरे



पारुल बत्रा, सातवीं, टीकमगढ़, म. प्र.

गर्मियों की छुट्टियाँ आईं मैं मेरे नाना जी के वहाँ गया। मेरे नाना जी के एक लड़का था। हम दोनों घूमने जाते थे। एक बार एक नदी के किनारे घूमने गए वहाँ पर खजूर के झाड़ बहुत संख्या में हैं। हमने सोचा कि चलो आज खजूर खा लें। मेरे नाना जी का लड़का ऊपर चढ़ा। उसका पैर फिसल गया वह नदी में गिर गया। पानी बह के जा रहा था वह भी साथ में बहने लगा। मैं खड़ा–खड़ा रोने लगा। उसने मेरे से कहा रो मत, कुछ न कुछ कर। मेरे दिमाग़ में बात आई। मैं एक खजूर का झाड़ उठाकर पानी के अन्दर आड़ा डाल दिया। वह उसके ऊपर खड़ा हो गया फिर मैंने उसका हाथ पकड़कर बाहर खींच लिया। हम घर गए सारी बात हमने नाना जी को बता दी। दिन छुट्टियों के निकले, मैं मेरे गाँव चला आया।

गोविन्द प्रसाद शर्मा, बालागुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

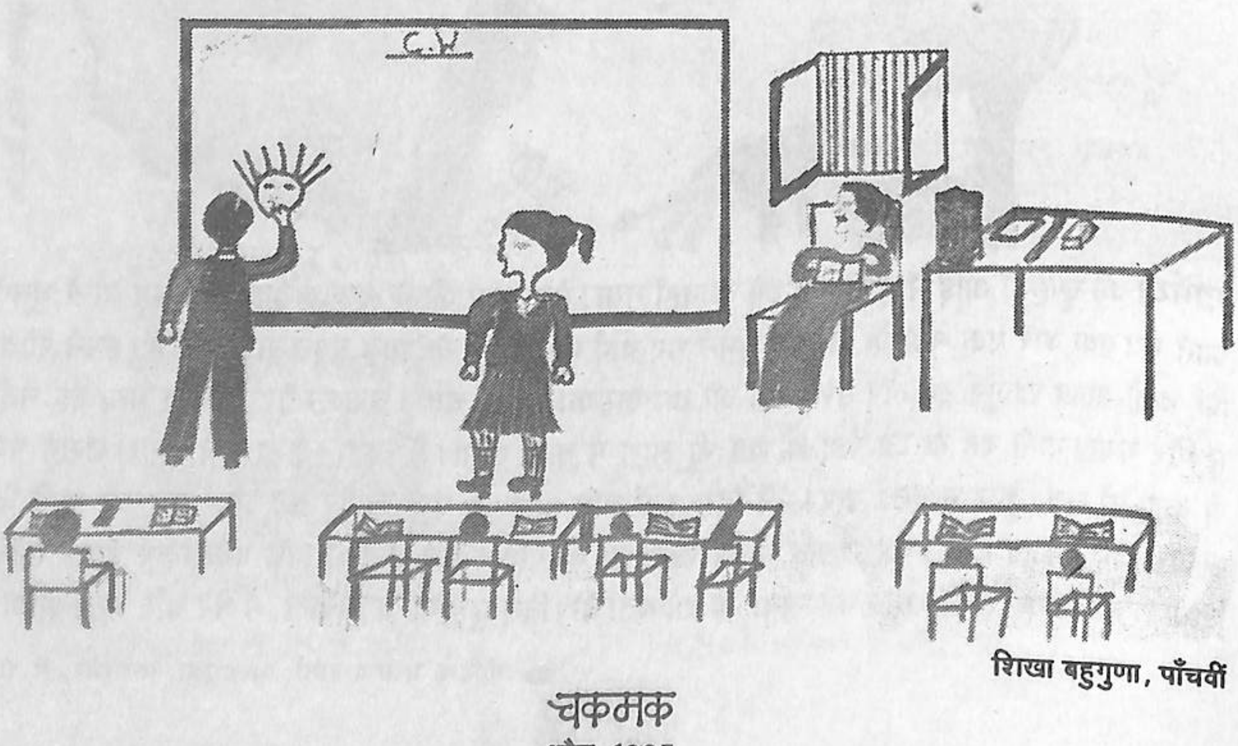
मेरा पन्ना

परीक्षा का भूत

परीक्षा आने लगी है निकट
समस्या होती जा रही है विकट
परीक्षा का यह भूत
आया है बनकर समस्या का दूत
परीक्षा का यह भूत
सिर पर छाने लगा है
भय हमारे मन में
जगह पाने लगा है
करनी पड़ती है रात दिन पढ़ाई
वरना अध्यापक और विद्यार्थी के बीच
हो जाती है घमासान लड़ाई
अध्यापक का चढ़ जाए पारा
और लगाए ट्यूशन का नारा
पढ़ाई तब होती और भी ज़्यादा
पर छात्र समझे उसका आधा
इसलिए अंक भी उतने ही आते
और मुँह उनके लटक जाते

दिलीप राजपुरोहित, नवमीं,
फालना, राजस्थान

मेरी कक्षा



शिखा बहुगुणा, पाँचवीं

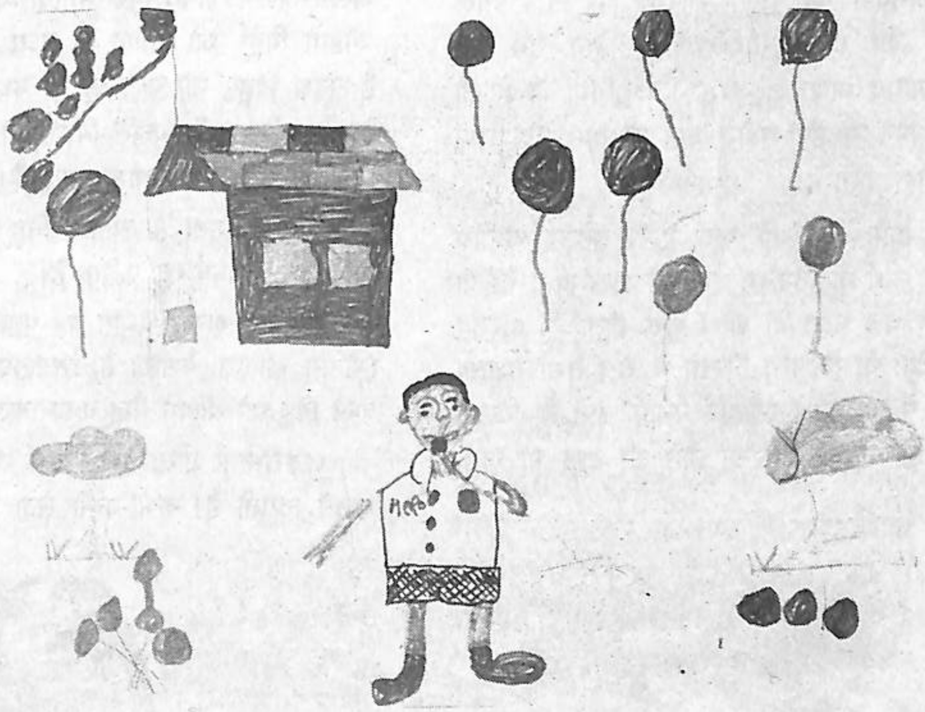


मेरा पन्ना

टॉफ़ी का कमाल

एक बार मेरे बड़े भैया एक ताश की गड्डी लेकर आए। मैंने उनसे ताश माँगे तो वे मना करने लगे। मैं ज़िद पकड़ गया तो वे समझाने लगे कि अच्छे बच्चे ताश नहीं खेलते। लेकिन मैं और ज़िद पकड़ गया क्योंकि मुझे भैया से डर नहीं लगता था। क्योंकि वो मुझे बहुत प्यार करते थे। जब मैं नहीं माना तो भैया ने एक तमाचा मार दिया। मैं कमरे में जाकर रोने लगा। मेरी मम्मी ने मनाने की कोशिश की। जब मैं नहीं माना तो वो थककर बैठ गईं। और फिर भैया आए और उन्होंने मुझे एक टॉफ़ी दी। मैं ख़ुश होकर टॉफ़ी खाने लगा। मुझे देखकर मेरी मम्मी भी ख़ुश हो गईं। मैं दौड़कर भैया के गले से लग गया।

चेतनसिंह सिकरवार, छठवीं, मुरैना, म. प्र.



मनीष सेंगर, तीसरी, रोहतक, हरियाणा

तोता अब न रहा

हमारे घर के पास एक पीपल का वृक्ष है। उसके एक खोल में दो तोते रहते हैं। तोते ने दो या तीन अण्डे दिए। उसमें से बच्चे निकले। एक बार रात में एक तोता गिर गया। तब वह उड़ना नहीं सीखा था। वह पैदल चलते–चलते हमारे एक पड़ौसी के घर चला गया। उनके यहाँ पिंजरा नहीं था इसलिए उन्होंने मकान–मालिक को दे दिया। उन्होंने उसे पाल लिया। अब उसे पाले एक साल हो गया है।

कुछ दिन पहले एक बिल्ली, तोते की गर्दन पकड़कर भाग गई और बाँस के पेड़ों के पास जाकर बाड़ी में कहीं छुप गई। फिर लोगों ने तोते को मरा हुआ देखा। सब लोगों को बहुत दुख हुआ।

आशीष कुमार साहू, आठवीं, देवरबीजा, दुर्ग, म. प्र.

और भी हैं नए साल

हम सब बहुत सारे त्यौहार मनाते हैं। कुछ धार्मिक महत्व के होते हैं, तो कुछ सामाजिक। कुछ सांस्कृतिक महत्व के होते हैं तो कुछ राष्ट्रीय। इनमें से ही कुछ त्यौहार ऐसे भी होते हैं जिन्हें नववर्ष आरम्भ होने पर मनाया जाता है।

आमतौर पर हम सब केवल अंग्रेज़ी कैलेंडर यानी जनवरी से दिसम्बर को ही याद रखते हैं और दिसम्बर माह की अन्तिम तारीख़ पर साल ख़त्म होने या जनवरी की पहली तारीख़ पर नया साल शुरू होने का जश्न मनाते हैं। लेकिन तुम यह जानकर शायद आश्चर्य करोगे कि दुनिया के किसी न किसी कोने में हर महीने कम से कम एक नया साल आरम्भ होता है।

हम अप्रैल की ही बात करें। हमारा राष्ट्रीय संवत शक मार्च के लगभग अन्त में शुरू होता है। या यूँ कहें कि चैत्र मास के साथ शुरू होता है। वास्तव में हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में चैत्र तथा वैशाख के महीनों में कई सारे त्यौहार मनाए जाते हैं, जिनमें कहीं न कहीं नववर्ष आरम्भ होने की बात भी जुड़ी रहती है।

इन महीनों में मनाए जाने वाले त्यौहार बिहू, गुड़ी पड़वा, वसाखी, चेटी चंड आदि नववर्ष आरम्भ होने के प्रतीक के रूप में ही मनाए जाते हैं। इस अंक में हम ऐसे ही कुछ त्यौहारों की चर्चा कर रहे हैं।

असम का बिहू

बिहू असम का एक ऐसा बड़ा त्यौहार है, जिसे वहाँ के सब लोग मनाते हैं। वास्तव में बिहू तीन अलग-अलग समय पर मनाया जाता है। पहला है 'बोहाग बिहू', जो अप्रैल के मध्य में होता है, दूसरा है 'माघ बिहू', जो जनवरी के मध्य में मनाया जाता है और तीसरा है 'काति बिहू', जो अक्टूबर के मध्य (कार्तिक महीने) में मनाया जाता है।

इनमें प्रमुख है 'बोहाग बिहू'। यह बिहू वसन्त, कृषि तथा नववर्ष का प्रतीक है।

बोहाग असम पंचांग का पहला महीना होता है। (बोहाग संभवतः वैशाख है) इसलिए इसमें मनाए जाने वाले बिहू को बोहाग बिहू कहा जाता है।

असम में प्रायः इस समय उत्तर-पश्चिमी हवाएँ चलने लगती हैं। कभी-कभी तेज़ हवा के साथ वर्षा



छाया : विवेक

असम का बिहू नृत्य

के छींटे भी पड़ने लगते हैं। इससे भूमि में नमी आती है और उसमें फिर से बीज डाला जा सकता है। इसी कारण से बोहाग बिहू खेती-बाड़ी आरम्भ करने का प्रतीक भी है।

बोहाग बिहू मनाने की तैयारियाँ काफ़ी समय पहले से आरम्भ हो जाती हैं और लगभग महीने भर चलती रहती हैं। बिहू के समारोह भी लगभग सात-आठ दिन चलते हैं।

बोहाग बिहू चोत (संभवतः चैत्र) महीने के आख़िरी दिन शुरू होता है। बिहू के इस पहले दिन को 'गोर बिहू' कहते हैं। इस दिन पशु सेवा, विशेषकर घरेलू पशुओं की ख़ूब सेवा की जाती है। उन्हें नहलाया-धुलाया जाता है, तरह-तरह से सजाया जाता है।

इसी दिन परिवार के बड़े-बूढ़े भी विधिपूर्वक विशेष स्नान करके अपने पारिवारिक पूजा स्थल या मन्दिर में जाकर प्रार्थना करते हैं।

अगला दिन यानी बोहाग माह का पहला दिन 'मानुह दिन' (मानव दिन) कहलाता है। इस दिन लोग बड़े-बुज़ुर्गों को आदर देते हैं तथा अपने सम्बंधियों और मित्रों से भेंट करने जाते हैं। विशेष भोजन भी बनता है। इस बिहू की एक ख़ास बात यह है कि इस अवसर पर उपहार देने की प्रथा है, जिसे बिहूवान कहा जाता है।

बोहाग बिहू के तीसरे दिन को 'गोहाई बिहू' कहा जाता है। इस दिन धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। बाद के दिनों में कोई विशेष समारोह नहीं होते, पर बिहू का सातवाँ दिन जिसे 'हात बिहू' कहा जाता है विशेष महत्व रखता है। इस दिन सात तरह की विभिन्न शाक-सब्ज़ियाँ पकाकर खाने का रिवाज है।

बोहाग बिहू का एक महत्वपूर्ण अंग है खेलकूद तथा नृत्य। इनमें बच्चे, बड़े, स्त्रियाँ सभी भाग लेते हैं। नृत्यों में सबसे प्रसिद्ध बिहू नृत्य है।

आरम्भ में बिहू गाँवों के लोगों का खेती-बाड़ी का उत्सव था। पर धीरे-धीरे इसे मनाने की विधि में भी परिवर्तन हुए हैं। पिछले कुछ समय से बोहाग बिहू असम में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाने लगा है।



छाया : विवेक

महाराष्ट्र की गुड़ी

वर्ष प्रतिपदा

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन मनाया जाने वाला यह उत्सव महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, आन्ध्र में उगादि, तमिलनाडु में चैत्रोत्सव और सिंधवासियों द्वारा चेटी चंड के रूप में मनाया जाता है। हिमाचल में यह चैत्रीपर्व के रूप में देखा जाता है।

वास्तव में यही वह दिन है जब विक्रम सम्वत आरम्भ होता है।

आन्ध्रप्रदेश में जहाँ इसे उगादि कहते हैं, यह बहुत खुशी का दिन होता है। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कुछ घटता है, वह सारे वर्ष की घटनाओं का संकेत देता है। घर का प्रत्येक व्यक्ति इस दिन तेल स्नान करता है और नए कपड़े पहनता है। घर के दरवाज़े पर आम के पत्तों के तोरण बाँधे जाते हैं। घर के आँगन को लीपा जाता है, उस पर रंगोली बनाई जाती है। पूरण पोळी इस दिन का विशेष मीठा पकवान होता है। ताज़ी इमली, पानी, गुड़, आम आदि

को अमरगाछ (नीम) के ताज़ा कड़वे फूलों में मिलाकर विशेष चटनी भी बनाई जाती है जिसे डगादि पच्चडि कहते हैं।

इस चटनी में अमरगाछ के कड़वे फूलों और गुड़ के मिश्रण का यह अर्थ है कि जीवन भी दुख और सुख का मिश्रण है।

इस उत्सव में विभिन्न प्रकार के खेल तथा उनकी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं, जिनमें स्त्री-पुरूष सभी भाग लेते हैं।

शाम को लोग मंदिर या गाँव के किसी सार्वजनिक स्थान पर एकत्र होते हैं। गाँव का पुरोहित नए पंचांग की पूजा करता है। वह वायु, वर्षा, फसल, पशु, धन और मनुष्यों के लिए वर्षफल भी बनाता है।

यही दिन महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन घर की छत पर गुड़ी लगाते हैं और मीठे पकवान के रूप में पूरण पोळी बनाई जाती है।

वर्ष प्रतिपदा का यह दिन नवरात्रि प्रारम्भ होने के रूप में भी कई जगह मनाया जाता है। हिमाचल में डोम जाति के लोग घर-घर जाकर नए वर्ष के महीनों के नाम तथा गीतियाँ 'ढोलरू' सुनाते हैं। उनके मुख से नए महीनों का नाम सुनना शुभ माना जाता है। 'ढोलरू' महीने भर तक गाए जाते हैं जो शुभ सम्वत के मंगलगीत कहलाते हैं।



पंजाब के गिद्धा नर्तकों का समूह

वसाखी

वसाखी जिसे बैसाखी या वैशाखी भी कहा जाता है सुनते ही पंजाब की याद आती है। वसाखी पंजाब में नववर्ष, ख़ासकर अच्छी फसल की खुशी तथा आने वाले साल की खुशहाली के लिए मनाई जाती है।

वसाखी पर पंजाब में कई जगह मेले लगते हैं। लगभग प्रत्येक गाँव-शहर के लोग अपने आसपास लगे ऐसे किसी मेले में शामिल होते हैं।

इन मेलों की एक ख़ास बात है भांगड़ा तथा गिद्धा नाच। भांगड़ा तो पंजाब का प्रसिद्ध नृत्य है जो



भांगड़ा

ढोल की थाप पर कहीं भी देखा जा सकता है। भांगड़ा मुख्यतः पुरुष ही नाचते हैं, पर गिद्धा तो महिलाओं का ही नाच है।

पंजाब में वसाखी का एक प्रसिद्ध मेला गुरुदासपुर के पास एक गाँव, पिंडोरी महन्ता, में एक प्राचीन आश्रम पर बड़े पैमाने पर लगता है। यह मेला प्रत्येक वर्ष, वर्ष प्रतिपदा से आरम्भ होकर वैशाख मास की तृतीया तक चलता है। लोक नृत्य तथा लोक गीत इस मेले के विशेष आकर्षण होते हैं। मेले में दुकानें लगती हैं, जिनमें अधिकांश खेती- बाड़ी से सम्बंधित तथा ग्रामीण घरों में काम आने वाली वस्तुओं की होती हैं।

यह तो थी हमारे देश की बात। हमारे आस-पड़ोस के कुछ देशों में भी अप्रैल से नया साल आरम्भ होता है।

बर्मा का जलपर्व

बर्मा, जिसे अब म्यांमार कहा जाने लगा है, में नया वर्ष 'जलपर्व' के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि बर्मा के लोगों के लिए पानी बहुत ज़रूरी चीज़ है। इस पर्व को वे 'थिंगयान' कहते हैं। बर्मी भाषा में इसका अर्थ होता है 'बदलना'। यानी पुराने के बदले नए साल का आना।

थिंगयान में नाच-गाना तो होता ही है, ख़ास बात है एक दूसरे पर पानी डालना। हमारे देश की होली की तरह। अन्तर इतना ही है कि होली में पानी में रंग घोलकर एक दूसरे पर डालते हैं और थिंगयान में केवल पानी।

थिंगयान के अवसर पर सड़कें ख़ूब सजाई जाती हैं, लोग बड़ी-बड़ी सजी-धजी गाड़ियों से बाल्टी भर-भर के पानी सड़क पर चलने वालों पर फेंकते हैं।

बर्मा में जिन जगहों पर इन दिनों पानी की कमी होती है, वहाँ चाँदी के कटोरों में पानी भरकर टहनियों से ही एक-दूसरे पर पानी छिड़कते हैं।

बर्मा के अराकान इलाक़े में लड़के-लड़कियाँ एक खेल खेलते हैं। लकड़ी की एक छोटी नाव के दोनों ओर वे कतार में खड़े हो जाते हैं। नाव में पानी भर दिया जाता है। अब एक लड़की चाँदी के कटोरे से नाव से पानी लेती है और किसी लड़के पर उड़ेल देती है। बारी-बारी सभी लड़कियाँ ऐसा ही करती हैं।



बर्मा में जलपर्व पर एक-दूसरे पर पानी फेंकते लोग।



कम्बोडिया में खेल पर्व पर आयोजित एक खेल।

फिर आती है लड़कों की बारी। पहले वे अनुमति माँगते हैं और फिर जल्दी ही दोनों दल पानी से भीग उठते हैं।

बर्मा के लोगों के लिए पानी का अर्थ है अच्छी चीज़ें, अच्छे विचार। उनका विश्वास है कि पानी से वे पिछले वर्ष की सारी बुराई धो डालते हैं और पवित्र होकर नया साल आरम्भ करते हैं। वे जब किसी पर पानी डालते हैं तो उसे भरसक भिगोने की कोशिश करते हैं, नए साल की शुभकामनाएँ जताने के लिए।

कम्बोडिया में खेल पर्व

कम्बोडिया (दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत-चीन प्रायद्वीप पर स्थित) में नया वर्ष 12 अप्रैल को मनाया जाता है। इस अवसर पर सारे देश में तीन-चार दिन तक इतने सारे खेल खेले जाते हैं कि गिनना भी मुश्किल। इसलिए इसे खेल पर्व कहा जा सकता है।

ऐसा ही एक खेल कुछ इस तरह होता है - लड़कों की कतार के सामने लड़कियों की कतार खड़ी है। एक लड़की कपड़े की गेंद लड़कों की ओर फेंकती है। लड़के गेंद पकड़ने की कोशिश करते हैं। कोई एक लड़का गेंद पकड़ लेता है। वह गेंद लेकर लड़कियों की ओर भागता है और एक लड़की के पीछे जाकर खड़ा हो जाता है। फिर गेंद से उसको मारता है।

लड़की न हिलती-डुलती है न कुछ कहती है। लड़का गेंद उसके पैरों के पास छोड़कर वापस अपने दल में चला जाता है। अब लड़की गेंद उठाकर दौड़ती हुई लड़कों की तरफ आती है और किसी एक लड़के के पीछे खड़े होकर उसकी पीठ पर ज़ोर से गेंद मारती है।

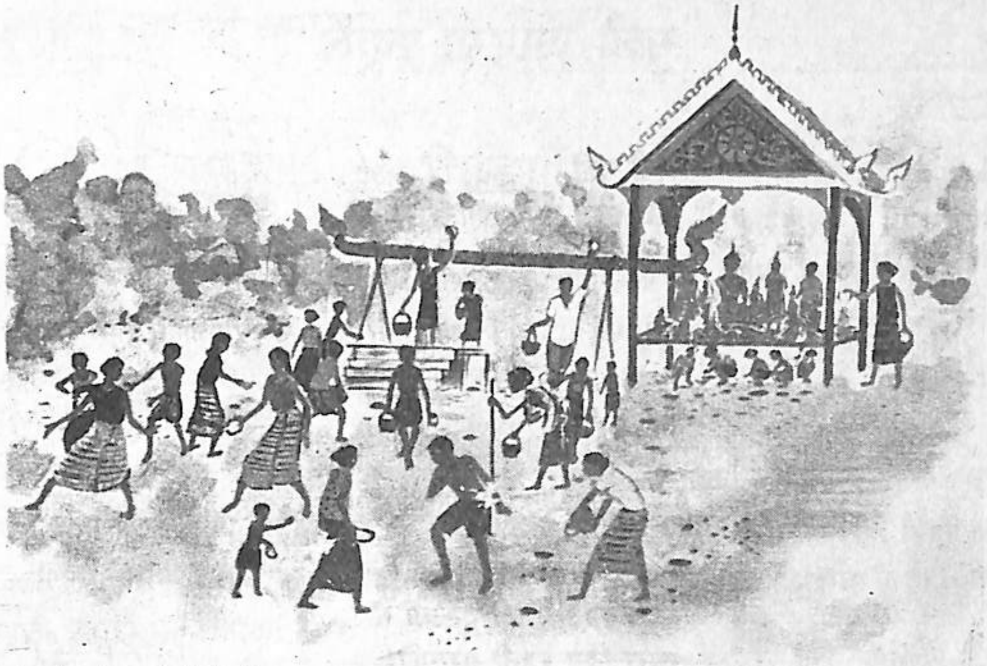
खेल दोबारा शुरू होता है। इस बार लड़के गेंद को हवा में उछालते हैं और लड़कियाँ उछलती हैं उसको पकड़ने के लिए। खेल का यह क्रम ऐसे ही चलता रहता है। ऐसे ही तरह-तरह के खेल नववर्ष पर खेले जाते हैं।

इसके अलावा मन्दिरों को साफ़ किया जाता है, सजाया ज़ाता है। कुछ मन्दिरों में बालू के टीले बनाए जाते हैं, जो कि बौद्ध धर्म के अनुसार नए वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटना होती है। बालू के टीले बनाना एक तरह की पूजा है।

लाओस में पिमाई

लाओस (दक्षिण-पूर्व एशिया का एक गणराज्य) का नया साल भी अप्रैल में शुरू होता है। इस अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव 'पिमाई' तीन दिन का होता है।

लाओस में मान्यता है कि जब नए वर्ष की देवी का आगमन होता है तो पुराने वर्ष की देवी चली जाती है।



लाओस में नववर्ष की तैयारी।

पिमाई का पहला दिन देवी की विदाई का दिन होता है। सब लोग चाँदी के कटोरों में सुगंधित जल लेकर मंदिर जाते हैं और नई देवी के स्वागत में सारी मूर्तियों को स्नान कराने में पुजारियों की मदद करते हैं। लाओस में भी बर्मा की तरह एक-दूसरे पर पानी फेंकने का रिवाज है।

मंदिरों में बालू ले जाना नए साल के अच्छे कामों में गिना जाता है। बहुत से लोग मन्दिर के आँगन में बालू के टीले बनाकर उन्हें सजाते हैं। अगर कोई अपने किसी अच्छे मित्र के साथ मिलकर बालू का टीला बनाए तो इसका यह अर्थ समझा जाता है कि वे दोनों पूरे वर्ष अच्छे मित्र बने रहेंगे।

वे युवक और युवतियाँ जो आपस में विवाह करना चाहते हैं, इस अवसर पर साथ-साथ बालू के टीले बनाते हैं।

पिमाई का दूसरा दिन 'दिन का ठहरना' कहलाता है। पिमाई के तीसरे दिन यानी 'देवी के आगमन' के दिन सब खुशियाँ मनाते हैं। लोग खाने की चीज़ें और फूल ले जाकर मंदिर में चढ़ाते हैं और पूजा करते हैं।

घर लौटने पर नए साल के स्वागत में हर एक अपनी उँगली में सफ़ेद धागा बाँध लेता है।

श्रीलंका में नववर्ष

हिन्द महासागर के इस छोटे द्वीप - श्रीलंका में भी नया साल अप्रैल में ही आरम्भ होता है।

नववर्ष के आरम्भ होने के पहले घर को साफ़-सुथरा करके सजाया जाता है। खाने-पानी के तरह-तरह की चीज़ें एकत्रित की जाती हैं। नए साल पर बनाई जाने वाली मिली-जुली तरकारी के लिए आलू, शक्करकंद, कद्दू, बैंगन, काजू, कटहल और केले खरीदे जाते हैं। नए साल पर बर्तन भी ख़रीदे जाते हैं।

नए साल की पूर्व संध्या पर लोग मंदिरों में जाकर पूजा करते हैं। अगली सुबह नए साल के आरम्भ होने की ख़बर उन्हें मंदिरों में बजने वाली घंटियों से लगती है। विशेष संगीत और पटाखों की आवाज़ के बीच श्रीलंका में नए वर्ष का आगमन होता है।

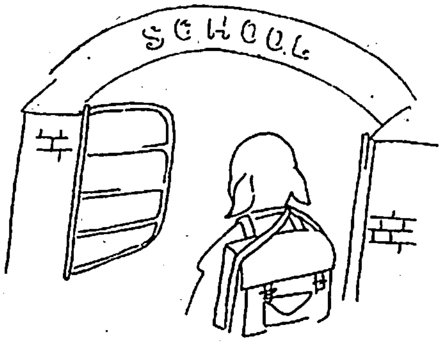
तो यह थी एक झलक अप्रैल में मनाए जाने वाले कुछ नववर्षों की। संभव है कुछ और देशों में और भी नववर्ष मनाए जाते हों। इसी तरह अन्य महीनों में भी ऐसे नववर्ष आरम्भ होते होंगे। तुम उनके बारे में पता करो।

❑ प्रस्तुति : राजेश उत्साही

इस लेख में आए कुछ चित्र एशिया के त्यौहार, इण्डिया (वाल्टर इम्बर-हैंस बोइच), ऑल इण्डिया (रेगेनाल्ड मेस्सी) से साभार।



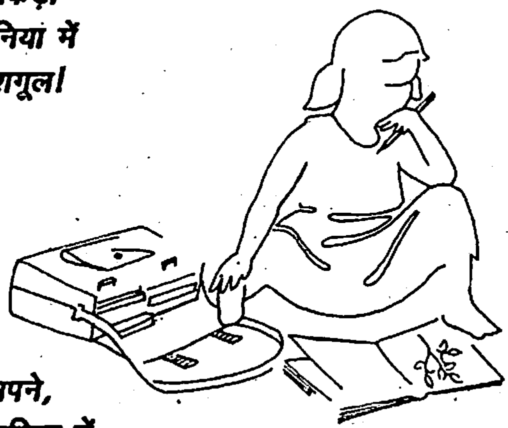
मुन्नी जाएगी स्कूल



अभी नहीं,
कुछ दिन के बाद
मुन्नी जाएगी स्कूल

अभी तो मुन्नी
छोटी सी है
बात-बात में
रोती भी है

हँसना-गाना, धमा-चौकड़ी
गुड्डे-गुड़ियों की दुनिया में
सारा दिन रहती मशगूल।



पिल्ला, चिड़िया
चाँद-सितारे
मुन्नी को
लगते हैं प्यारे

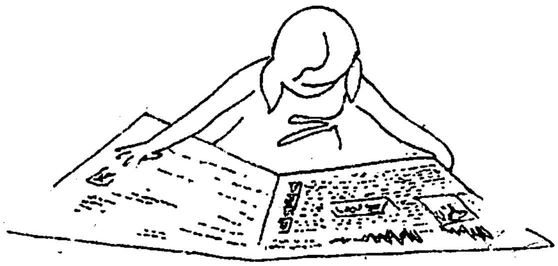
अभी देखती नन्हें सपने,
पहुँच किताबों की दुनिया में
सब जाएगी भूल।



अभी उमर है
केवल ढाई,
खेलो मुन्नी
यही पढ़ाई।

सारा जीवन शाला होगी
पर न मिलेगा फिर ये बचपन
नहीं मिलेगी मिट्टी धूल।

अभी नहीं,
कुछ दिन के बाद
मुन्नी जाएगी स्कूल।



❑ श्याम सुशील

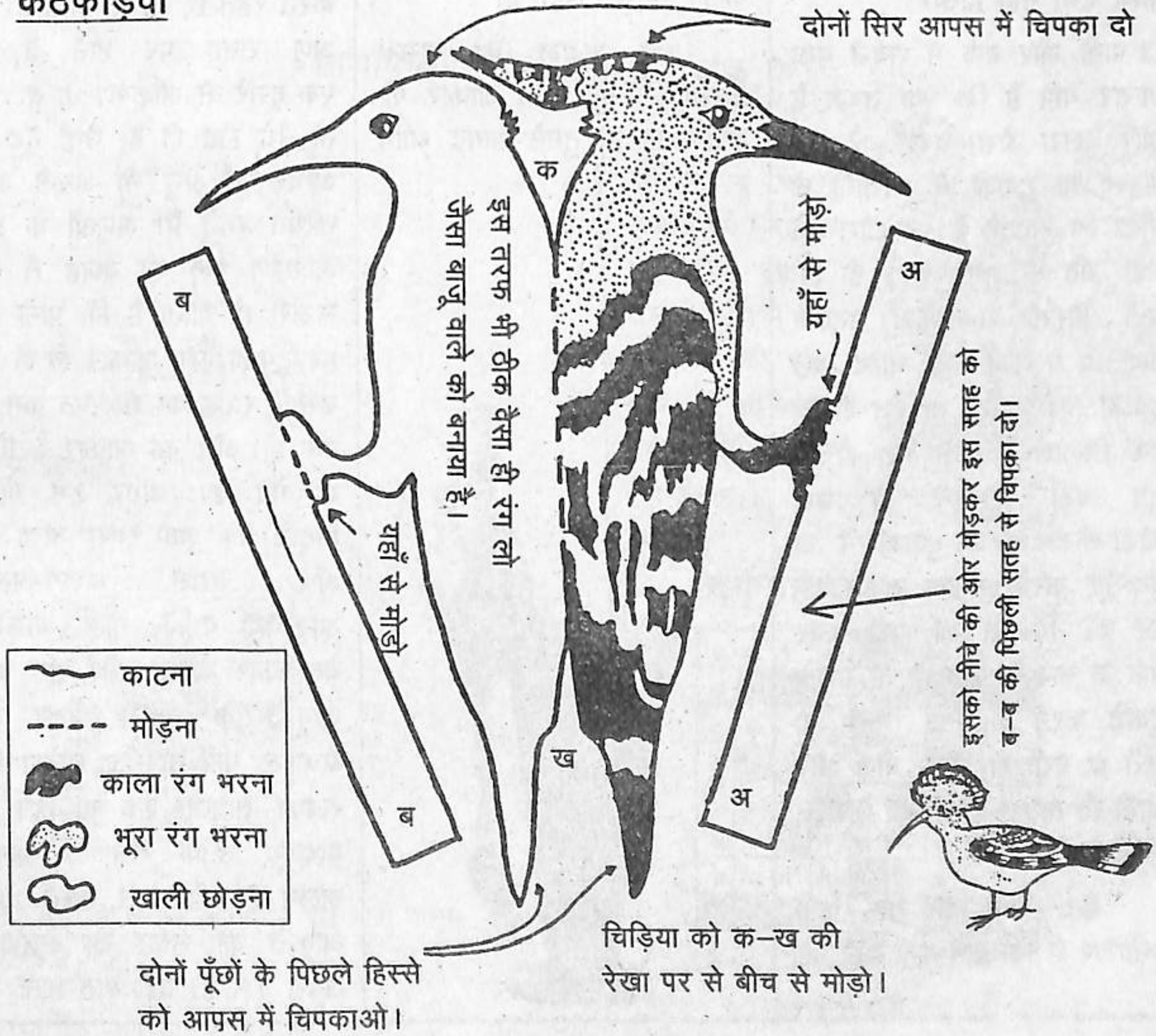
सभी चित्र : उमेश गीर (सन्दर्भ से साभार)

चिड़ियाँ

इस बार से हम तुम्हें कुछ चिड़ियों के मॉडल बनाने का तरीक़ा बता रहे हैं। इस तरह से तुम अपना चिड़िया–घर बना सकते हो। इसे बनाने के लिए तुम्हें यहाँ दिए हुए चित्रों को किसी दूसरे काग़ज पर उतारना होगा। चाहो तो इनकी ट्रेसिंग उतार लो या फिर कार्बन काग़ज़ की मदद लो। इस चित्र पर बने अक्षर, संकेत और रंग अभी मत उतारना। वो तो सिर्फ़ इसलिए बनाए गए हैं ताकि अपन को पता चल जाए कि कहाँ रंग भरना है, कहाँ चिपकाना है, आदि।

तो यह चिड़िया बनाने के लिए इस क्रम में काम करना है तुम्हें। पहले चित्रों को सफ़ेद काग़ज पर उतारना। फिर चित्र पर बने डब्बे में जैसे निर्देश दिए हैं उनके अनुसार चित्रों पर रंग भरो। फिर चित्रों को किनारे–किनारे से काट लो, जैसे डिब्बे में बताया है। फिर जहाँ–जहाँ पर मोड़ने का दिखाया है वहाँ–वहाँ मोड़कर चिपकाने वाली जगहों पर चिपका लो।

कठफोड़वा





सवालीराम

❑ पानी को ऊपर उछालने पर नीचे गिरते हुए वह गोल बूँदों में टूटकर क्यों गिरता है? जबकि पानी के ही दूसरे रूप, बर्फ़ के साथ ऐसा नहीं होता।

❑ पानी और बर्फ़ में सबसे बड़ा अन्तर यही है कि एक तरल है और दूसरा ठोस। तरल को कई हिस्सों या टुकड़ों में आसानी से बाँटा जा सकता है पर ठोस को नहीं, यह तो तुम जानते ही हो। यहाँ, हिस्सों से हमारा मतलब अणु या परमाणु नहीं, बल्कि बड़े टुकड़ों जैसे चुल्लू या बूँद से है। एक गिलास में पानी भरा हो तो तुम बड़ी आसानी से उसे थोड़ा-थोड़ा करके टुकड़ों में या बूँद-बूँद करके टपका सकते हो। पर वही गिलास का पानी अगर बर्फ़ के रूप में जमा हो तो उसके टुकड़े करने के लिए चम्मच या छुरी या ऐसी ही किसी चीज़ और थोड़ी-सी ताक़त लगाने की ज़रूरत तो होगी ही, है न।

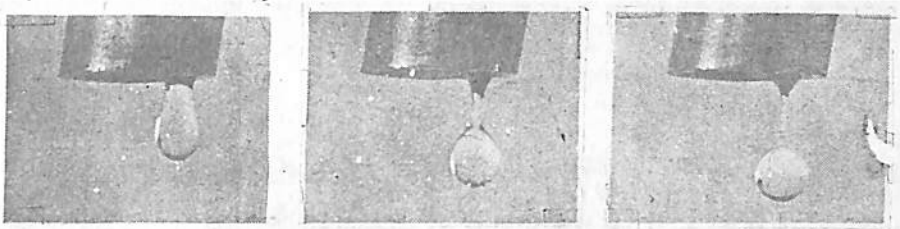
इन दोनों में यह फ़र्क इसीलिए है कि जब हम पानी को ठण्डा करते जाते हैं तो उसके अणुओं के बीच का खिंचाव या आकर्षण बढ़ता जाता है और पानी जमकर बर्फ़ बन जाता है। यानी बर्फ़ बन जाए तो फिर हम आसानी से उसके हिस्से नहीं कर सकते। इसीलिए अगर हम बर्फ़ का कोई टुकड़ा उछालें तो वह टुकड़ों में नहीं टूटता क्योंकि उसके अणु तो आकर्षण के बल से आपस में मज़बूती से बँधे होते हैं। पर पानी को उछाला जाए तो वह कई छोटी बड़ी बूँदों में बँट जाता है क्योंकि इसके अणु बहुत ढीले बंधन में बँधे होते हैं। इसके अणुओं के बीच आकर्षण का बल काफ़ी कमज़ोर होता है।

अब सवाल का दूसरा हिस्सा कि बूँदें गोल आकार की क्यों होती हैं। तुमने शायद ध्यान



दिया हो कि यह बात सभी तरह के तरल पदार्थों पर लागू होती है। सिर्फ़ पानी ही नहीं, दूध, चाय, शर्बत भी अगर छलक जाए तो ये भी गोलाकार बूँदों में ही गिरती हैं। शक्कर की चाशनी या शहद जैसे गाढ़े तरल भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं। इनकी बूँदें भी गोल ही होती हैं। पर ऐसा होता क्यों है?

किसी भी तरल की एक बूँद में बहुत बहुत सारे अणु रहते हैं, यह बात तुमने पहले भी सुनी होगी। अन्दाज़ लगा सकते हो कितने? नहीं। सैकड़ों-हज़ारों नहीं, लाखों-करोड़ों। ये सब एक दूसरे को अपनी-अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं, खींचते रहते हैं। जो अणु सतह पर होते हैं, वे एक-दूसरे से आकर्षण के बल से तो बँधे होते ही हैं, उन्हें बूँद के अन्दर के अणु भी अपनी ओर खींचते रहते हैं। अणुओं के इस आकर्षण बल की वजह से यह ज़रूरी हो जाता है कि पानी का हर टुकड़ा ऐसा आकार ले ले कि उसकी सतह का क्षेत्रफल कम से कम हो। और वह आकार है गोले या गेंद का। अगर हम गीली मिट्टी की एक ख़ास मात्रा लें और उससे अलग-अलग आकृतियाँ बनाएँ -गोल, चौकोर, बेलनाकार आदि। और हर बार आकृति के बाहरी सतह का क्षेत्रफल नापें तो पता चलेगा कि सबका आयतन एक सा होने के बावजूद उनके क्षेत्रफल अलग अलग हैं। और इन सबमें गोल आकृति की सतह का क्षेत्रफल सबसे कम है। यही बात पानी या



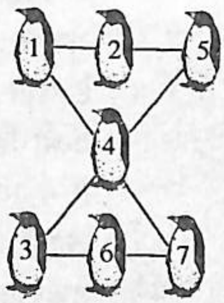


तरल की बूँदों पर भी लागू होती है। किसी निश्चित आयतन में सबसे कम क्षेत्रफल वाली बनावट की ज़रूरत ही तरल की बूँदों को गोल बना देती है।

पर तरल की बूँदें हमेशा बिल्कुल गोल ही नहीं होतीं। मसलन टप-टप टपकते नल से लटकती बूँद। इस तरह की बूँद जब आकार में बड़ी होती जाती है तो उसका आकार बदलता जाता है। फिर अपने ही वज़न से वह नीचे की ओर खिंचती जाती है, गुरूत्वाकर्षण बल के चलते। और अन्ततः बूँद टपक जाती है। इसी तरह थाली या किसी चिकनी सतह पर अगर एक जगह ड्रॉपर से पानी टपकाओ तो एक हद तक तो बूँद गोल ही रहती है। पर फिर एक हद के बाद जैसे जैसे पानी की मात्रा बढ़ाते जाओ बूँद चपटी-सी होती जाती है। पर इस चपटी बूँद को भी ध्यान से देखो तो पाओगे कि इसके किनारे और ऊपरी सतह गोल ही होते हैं।

माथापच्ची : हल मार्च, 97 अंक के

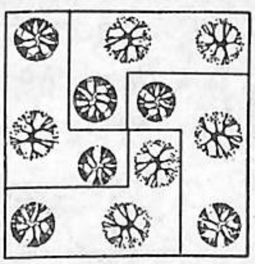
1.



2. 20 मल्लाह।

3. $(9 + 8 + 7 + 6 - 5) \div (4 - 3 - 2 + 1) = 0$

4.



5. बन्द घड़ी हफ्ते भर में ज्यादा बार सही समय बताती है।

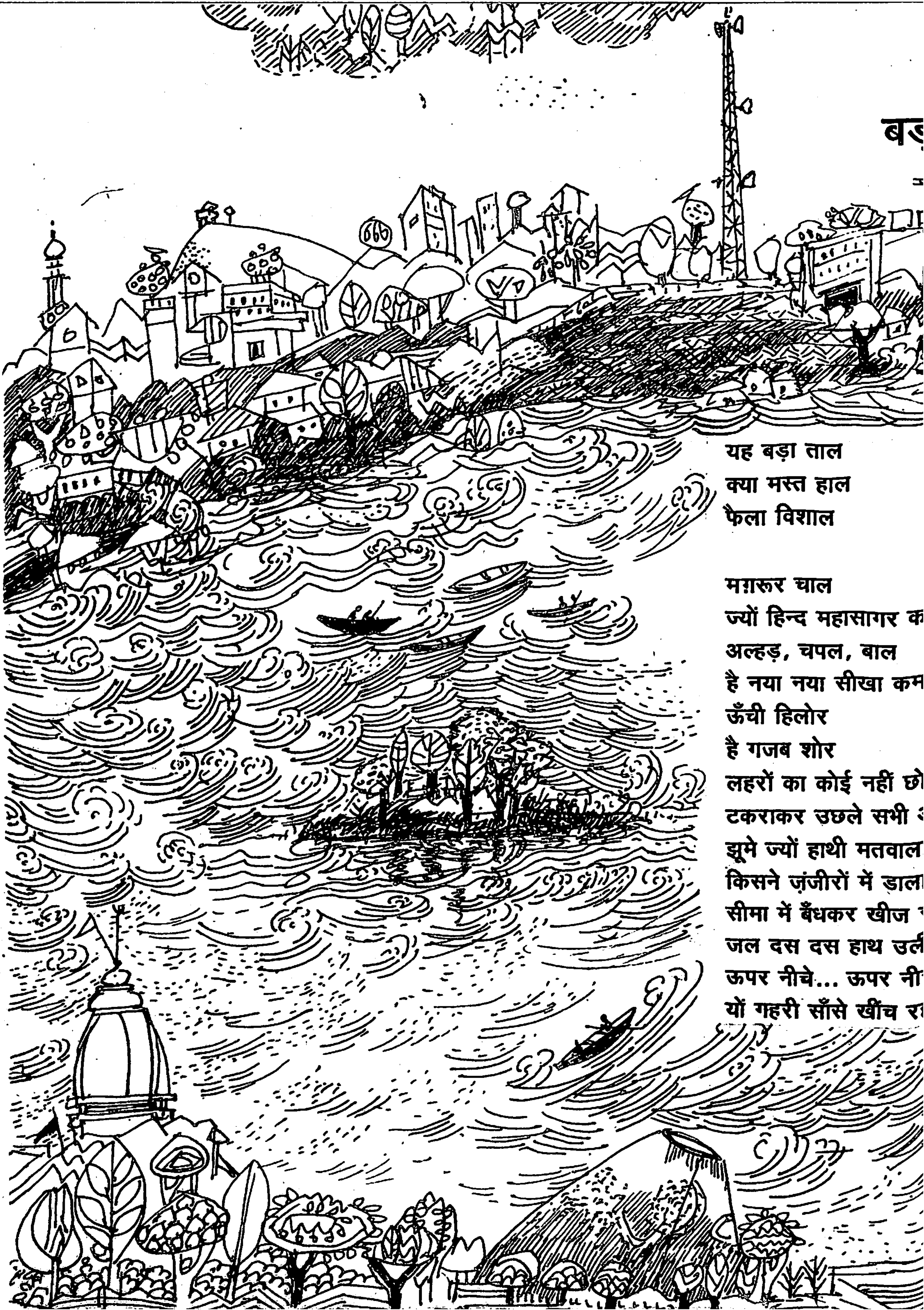
6. बीच की खड़ी रेखा की ऊपर वाली चवन्नी को सरकाते हुए नीचे लाओ, उसकी मदद से बीच की रेखा की सभी चवन्नियों को ऊपर धकेल देने पर सही हल मिलेगा।



वर्ग पहेली 67 का हल

1 ए	क	ट	2 क		3 दि	ल	च	स्प
क			4 फा	जि	ल			
5 पं	च	6 शी	ल		7 बा	द	8 शा	9 ह
थ		10 श	त	11 र	ज		12 हिं	जा
13 दो	14 य	म		जी		15 अ	द	म
16 का	म		17 स	दा	18 चा	र		त
19 ज	न	व	री		20 टु	क	टु	क
			21 है	ल	का			र
22 पु	रा	त	न		23 रे	म	जा	ना

वर्ग पहेली – 67 का कोई सही हल नहीं मिला है।

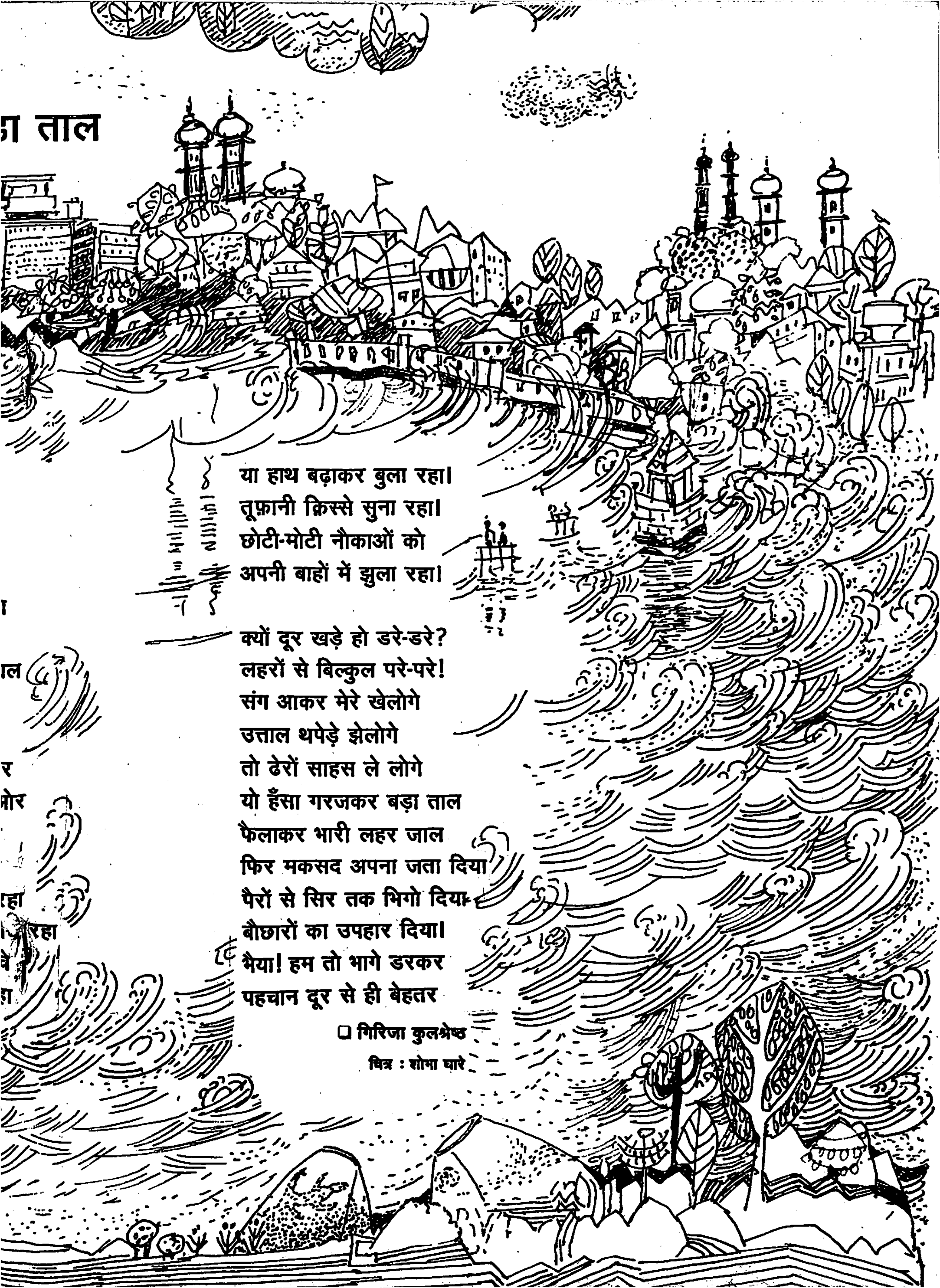


बड़

यह बड़ा ताल
क्या मस्त हाल
फैला विशाल

मग़रूर चाल
ज्यों हिन्द महासागर क
अल्हड़, चपल, बाल
है नया नया सीखा कम
ऊँची हिलोर
है गजब शोर
लहरों का कोई नहीं छो
टकराकर उछले सभी
झूमे ज्यों हाथी मतवाल
किसने ज़ंजीरों में डाला
सीमा में बँधकर खीज
जल दस दस हाथ उछ
ऊपर नीचे... ऊपर नी
यों गहरी साँसे खींच र

ड़ा ताल



या हाथ बढ़ाकर बुला रहा।
तूफ़ानी क़िस्से सुना रहा।
छोटी-मोटी नौकाओं को
अपनी बाहों में झुला रहा।

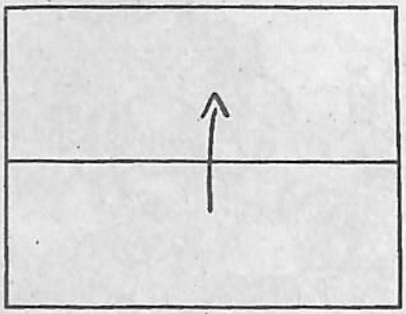
क्यों दूर खड़े हो डरे-डरे?
लहरों से बिल्कुल परे-परे!
संग आकर मेरे खेलोगे
उत्ताल थपेड़े झेलोगे
तो ढेरों साहस ले लोगे
यो हँसा गरजकर बड़ा ताल
फैलाकर भारी लहर जाल
फिर मकसद अपना जता दिया
पैरों से सिर तक भिगो दिया
बौछारों का उपहार दिया।
भैया! हम तो भागे डरकर
पहचान दूर से ही बेहतर

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

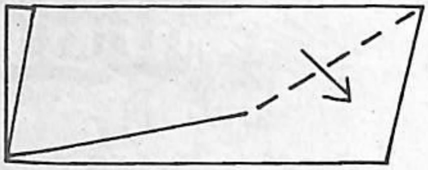
चित्र : शोभा घारे

खेल काग़ज़ का

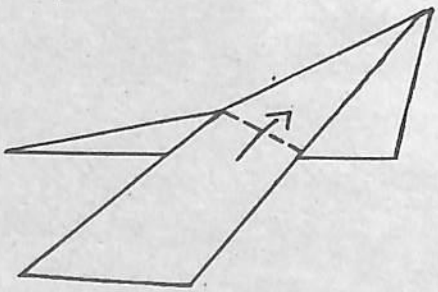
हंस



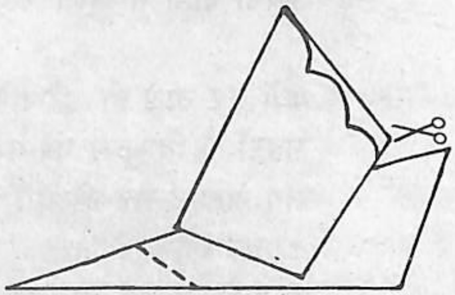
1. एक आयातकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



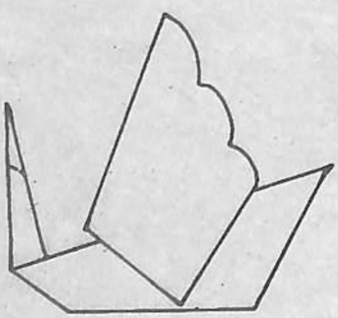
2. अब इस मुड़े हुए काग़ज को चित्र में दिखाई सीधी रेखा पर से काट लो। फिर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ना है। ऐसा दूसरी ओर भी कर लो।



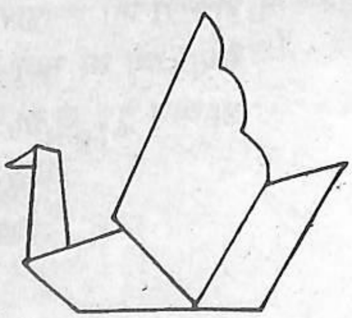
3. इस तरह। आकृति के दोनों कटे हुए हिस्सों को दोनों ओर करके मोड़ दो। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो। इसी तरह दूसरी ओर भी मोड़ लो।



4. इस तरह की आकृति बनेगी। गर्दन बनाने के लिए टूटी रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ बनाओ। इसी चित्र में पंख पर दिख रही रेखा पर से काट लो।



5. ऐसी आकृति बन जाएगी। हंस की गर्दन पर दिख रही छोटी-सी टूटी रेखा पर से मोड़कर चोंच बना लो।



5. आँखें बना लो। और देखो हंस बना या नहीं।

आख़िर कहाँ से आता है - वसन्त!

❑ ताजिमा शिन्जी

मारुति पर्वत पर, जो कि किसी भी गाँव से बहुत दूर था, इस साल बर्फ़ इतनी ज़्यादा मात्रा में गिर रही थी, जैसे कि कभी ख़त्म ही न होगी।

मारुति पर्वत के मुखिया दानकिची ने जब गुफा के द्वार से बाहर अपना सिर निकाला और चौड़े आसमान को निहारा तो काँप गया। पहाड़ियों, नंगे ठूँठ पेड़ों और सूखी घास के मैदानों को ढकती हुई बर्फ़ दूर-दूर तक ऐसे गिर रही थी, जैसे कि आकाश में की जा रही आतिशबाज़ी की सफ़ेद चिनगारियाँ हों।

इस दृश्य को देखकर दानकिची हैरान रह गया। उसने अपने अन्दर किसी को यह कहते हुए सुना, 'काश, इन हिमलवों में से हर एक के लिए खाने की कोई चीज़ होती,' और वह अपनी उँगलियों पर कुछ गिनने लगा।

'सेब, अंगूर, नेजे, बीजफल..... हाँ, और तेंदु, शकरकन्दी...! ओह, पिछले एक महीने से तो मेरे पेट में कुछ भी नहीं गया है। बेचारा पेट तो पीठ से जा लगा है और अगर हालत बेहतर न हुई तो मैं भूख से ही मर जाऊँगा।'

बन्दरों के मुखिया को ज़ोर की कँपकँपी छूट गई और दाँत किटकिटाते हुए उसने अपनी आँखें गुफा के अन्दर की ओर घुमा लीं।

गुफा की हल्की रोशनी में दानकिची का मारुति पर्वत का सारा क़बीला बैठा था। हर परिवार या मित्रों का झुण्ड गर्माहट के लिए एक-दूसरे से सटा बैठा था। निराश शिशु माताओं की छातियों से चिपके थे, बच्चे असंतोष में दाँत किटकिटा रहे थे और बड़े-बूढ़े बन्दर सिर एक तरफ को घुमाए आकाश को



घूर रहे थे। जो बन्दर कमज़ोर और दुबले-पतले थे और जिनकी सिर्फ़ आँखें ही जीवन-ज्योति से चमक रही थीं, वे उन आँखों से मुखिया दानकिची की ओर मूक-भाव से देख रहे थे, खाने को कुछ माँगते हुए।

दानकिची कई वर्षों से मारुति पर्वत का मुखिया था। वह अपने क़बीले में सबसे अधिक शक्तिशाली ही नहीं था, बल्कि अपनी बुद्धि, बहादुरी और उदार स्वभाव के नाते उसे उन बन्दरों का आदर भी प्राप्त था, जिनका वह राजा था।

जब कभी दुश्मन बन्दर हमला करते तो दानकिची हमेशा अपने क़बीले की अगुआई करके उनका मुकाबला करता और अगर कभी अपने ही बन्दरों में झगड़ा होता तो वह तुरन्त सुलह करवा देता। हाँ, वह बूढ़े, मादा तथा शिशु बन्दरों का भी विशेष ध्यान रखता था।

इसीलिए सभी बन्दरों की उम्मीदें उसी पर लगीं थी। ज़िम्मेदारी का बोझ महसूस करते हुए उसने अनजाने में ही दाँत भींच लिए और आँखें बन्द कर लीं और अपनी अक़्ल से काम लेने की कोशिश की।

आँखें बन्द रहने पर भी, सोचने की लाख कोशिशें करने पर भी एक दृश्य उसकी आँखों के सामने नाचता रहा। यह घटित हुआ था इसी साल की भयंकर गर्मी के अन्त में एक दिन।

इस वर्ष गर्मी इतनी अधिक थी कि मारुति पर्वत के सबसे बूढ़े बन्दर ने भी गर्मी का ऐसा मौसम नहीं देखा था। जलते सूरज की गर्मी तले तपते आसमान ने खेतों और पहाड़ों को भूनकर भूरा कर दिया था। आकाश का नीला रंग फीका पड़कर सफ़ेद हो गया था। बादल उड़ते-फिरते थे बरसात की उम्मीद लिए, लेकिन प्यासी धरती पर एक भी बूँद नहीं गिरी थी। इतनी अधिक गर्मी से खेतों की फसलें पहले झुलस गई थीं और फिर जल गई थीं।

गाँववाले बहुत ही निराश थे। अगर जल्दी ही कुछ न हुआ तो ऐसा भयंकर अकाल पड़ेगा जैसा कि किसी ने सुना भी न हो। हर रोज़ गाँववाले लगभग सूख चुकी नदी से पानी दूर खेतों तक ले जाते तथा सूखी तलहटी में से पानी तक खोदने का प्रयास करते। वे जीवन को बचाने के लिए लड़ रहे थे, लेकिन उनकी मेहनत सफल नहीं हो रही थी।

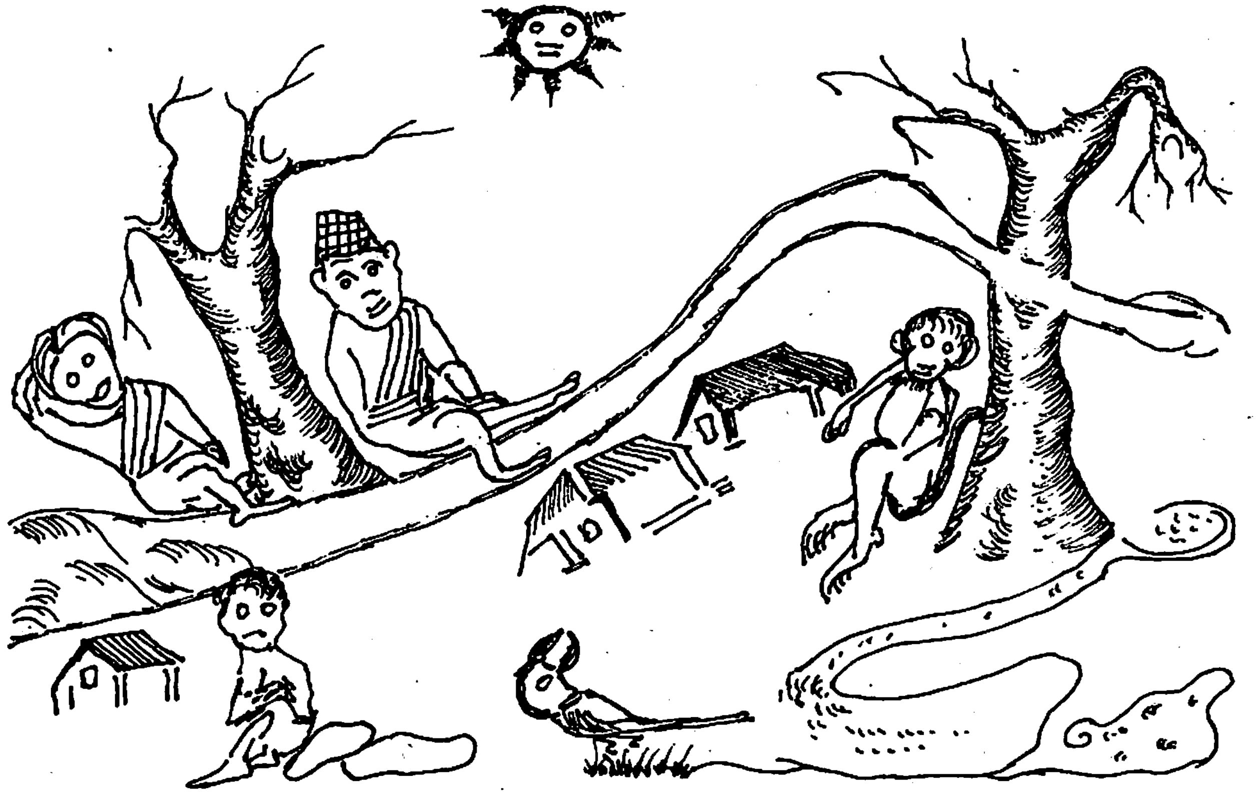
पतझड़ का मौसम आते-आते धान के पौधे धरती पर गिर चुके थे एक भी दाना पैदा किए बग़ैर। सब्ज़ियों के बाग़ भी ख़ाली थे और यहाँ तक कि जंगली घास और बागड़ तथा पहाड़ों के पेड़ भी सूखकर गिर गए थे। ऐसा लगता था कि सारा पानी कहीं और चला गया था। ऐसी हालत में जीवों का बड़ा बुरा हाल हो गया था।

चूँकि ऐसा लगता था कि गर्मी का दौर कभी ख़त्म ही नहीं होगा बन्दरों का मुखिया दानकिची स्वयं पहाड़ से नीचे, जहाँ लोग रहते थे, यह देखने गया कि वहाँ की क्या हालत है। इस साल मारुति पर्वत पर नेजे और बीजफल भी नहीं हुए थे और दानकिची को पता था कि उसके क़बीले के पास आने वाली सर्दी में खाने के लिए पर्याप्त भोजन भी नहीं होगा। वह यह देखने जा रहा था कि क्या वह गाँव के खेतों में से कुछ अनाज चोरी कर सकता है।

दानकिची को विश्वास नहीं हुआ कि गाँव के आस-पास स्थिति इतनी ख़राब है। खेतों में ज़मीन सूखी थी और उनमें दरारें पड़ गईं थी। फसल का दूर-दूर तक नामो-निशान नहीं था, सिर्फ़ हवा में नाचती-बिर्राती सूखी धूल थी।

उसने कुछ और भी देखा। भूख और गर्मी से सताए हुए ग्रामवासी सड़कों के किनारे चुपचाप लेटे थे और उनकी सूखी आँखें मौत की ओर नज़रें गड़ाए हुए थीं। इस तपते हुए तथा सूखाग्रस्त स्थान में कोई भी ऐसा इन्सान दिखाई नहीं पड़ता था जो ज़ालिम सूरज के नीचे सूखती लाशों को भी हटा सके। अभी भी लोग झोंक में इधर-उधर ठोकरें खाते पहाड़ों की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि वे ज़्यादा दूर तक जा सकेंगे।

दानकिची इन अविश्वसनीय दृश्यों को देखता रहा। उसकी कँपकँपी छूट गई और उसका शरीर पसीने से तर-बतर हो गया। वह मन ही मन झल्लाया, 'ओह, यह तो बहुत ही ज़्यादती है। इन



ग़रीबों पर कितना बड़ा अकाल आ पड़ा है। इस तरह अस्त-व्यस्त तरीक़े से इधर-उधर ठोकरें खाते हुए तो उन्हें अपने ही लोग पकड़कर खा जाएँगे- ओफ़, कितनी ज़्यादती है।'

दानकिची झुककर, झाड़ियों में छिपते हुए वापस मारुति पर्वत की ओर जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भाग खड़ा हुआ। उसके पास खोने के लिए बिल्कुल भी वक़्त नहीं था। उसे अपने क़बीले को तुरन्त इस महा-अकाल की सूचना देनी थी।

अगर इन्सानों की यह हालत है तो जल्दी ही मारुति पर्वत को भी शायद ऐसी ही मुसीबत और परेशानी का सामना करना पड़े। दाँत किटकिटाते और चारों पैरों पर भागते हुए दानकिची का मन निराशा से भर गया।

'हे भगवान, अभी तो पतझड़ ही है। कैसे बिताएँगे हम इतनी लम्बी सर्दी? जब बर्फ़ की तरह जमा देने वाली हवाएँ चलेंगी और गहरी बर्फ़ के कारण हम दुनिया से कट जाएँगे... पिछले वर्षों में तो हम पतझड़ के ख़त्म होते ही पहाड़ों से उतरकर गाँव में खेतों से कच्चा-पक्का अनाज चुराने चले जाते थे लेकिन इस साल तो कुछ भी नहीं है। यह तो बहुत बड़ी विपदा है।'

चिन्ता से सिर हिलाते हुए और यह सोचते हुए कि क्या किया जाना चाहिए, वह मारुति पर्वत का रास्ता चढ़ने लगा। दानकिची एकाएक रास्ते में रुक गया। नदी के किनारे के खर-पतवार से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी जैसे कि कोई काम में जुटा हो। दानकिची चुपचाप आवाज़ की ओर सरक गया।

उसने देखा कि एक किसान बड़ी उतावली में ज़मीन से कुछ उठाकर अपनी बाँह के नीचे दबाए बक्से में डाल रहा था।

'आहा, शायद खाने के लिए कुछ हो?' दानकिची ने सोचा और वह बक्से में झाँकने के लिए किसान के पीछे सरक आया। बक्सा गहरी लाल बड़ी, छतरीनुमा खुम्बियों से लगभग पूरा भरा हुआ था।

'अरे, एक मिनट ......,' दानकिची ने ख़ुद से कहा और किसान के चेहरे को हैरानी से देखा। ये लाल, बड़ी, छतरीनुमा खुम्बियाँ ज़रूर ज़हरीली,

हँसीवाली खुम्बियाँ हैं। ज़हरीली हँसीवाली खुम्बियाँ तो जानलेवा होती हैं। जो भी इन्हें खाता है वह पहले तो हँसने लगता है और फिर जैसे-जैसे हँसी आपे से बाहर होकर बढ़ती जाती है, आदमी पूरी तरह पागल होकर मर जाता है। जब मैं छोटा था तो उस बूढ़े बन्दर ने, जो मारुति पर्वत का मुखिया था, इन खुम्बियों में से किसी को न खाने के बारे में आगाह किया था। ज़रूर ये उसी तरह की खुम्बियाँ हैं।

दानकिची ने अपने चेहरे पर से चू रहे पसीने को पोंछा और खुद से कहा, 'अजीब बात है! अगर यह किसान यहीं आस-पास रहता है तो इसे ज़रूर पता होगा कि ये सुर्ख लाल खुम्बियाँ बहुत ही ज़हरीली होती हैं। समझ में नहीं आता कि क्या हो रहा है.....?'

किसान ने झाड़ियों में से देख रहे बन्दर की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और वह उसी तरह ज़हरीली, हँसीवाली खुम्बियाँ तोड़कर बक्से में डालता रहा। फिर ज्यों ही वह खुम्बियों से भरे बक्से को लेकर गाँव की ओर चलने लगा तो दानकिची चुपचाप उसके पीछे हो लिया। शायद इस किसान को पता था कि इन खुम्बियों के ज़हर को कैसे अलग किया जा सकता है ताकि वे खाने लायक बन सकें।

धीरे-धीरे किसान गाँव के बाहर एक छोटे से घर के पास पहुँचा और फिर अन्दर चला गया। दानकिची एक छोटी-सी खिड़की के पास सरक आया और उसने अपनी नाक उसके साथ सटा दी।

घर छोटा, लेकिन आरामदेह और सुरूचिपूर्ण था और कमरे में बहुत-से बच्चे थे। दानकिची उँगलियों पर गिनने लगा, 'एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात.... ओह सचमुच सात छोटे-छोटे भाई बहिन।' बच्चों ने अपनी महीन और मीठी आवाज़ में पिता का स्वागत किया। उन्होंने पिता से बक्सा लेने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ा दिए। दानकिची ने अपनी साँस ही रोक ली, जब उसने देखा कि उनकी कलाइयाँ और बाँहें बहुत ही पतली और कमज़ोर थीं।



पिता ने अपनी पत्नी को रसोई में से बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। खिड़की के बाहर से दानकिची कुछ सुन तो नहीं पाया लेकिन उसने देखा कि अपने पति की बात सुनकर बच्चों की माँ ने धीरे-से अपना सिर हिलाया। उसके चेहरे पर दुख का गहरा भाव था।

माँ ने बच्चों से बक्सा ले लिया और वापस रसोई में जाते हुए उनसे कुछ कहा।

उनकी माँ ने जो कुछ भी कहा था, उसे सुनकर बच्चे एकाएक इतने खुश हो गए कि दानकिची को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। अपने हाथ-पैर इधर-उधर पटकते तथा चिल्लाते हुए बच्चे कमरे में चारों ओर आश्चर्यजनक स्फूर्ति से खेलने कूदने लगे।

रसोई में खुम्बियों से भरा एक बर्तन, लपलपाती आग पर उबलता हुआ, एक मधुर संगीत गुनगुनाने लगा।

'हूँ, मैं नहीं समझता कि उसने खुम्बियों में से ज़हर अलग करने के लिए कुछ विशेष किया है.....। खैर, यहाँ हो क्या रहा है?' खिड़की के बार खड़ा दानकिची चुपचाप यह सब देखते हुए सोचने लगा।

जल्दी ही खुम्बी-सूप से भरे छोटे-छोटे कटोरे एक-एक करके सातों बच्चों को दे दिए गए। पूरे परिवार द्वारा खाने का मज़ा लेते समय कमरा कटोरों से उठ रही भाप से भर उठा। उत्साह से खाना शुरू करते ही बच्चों की आँखें चमकने लगीं। किसान और उसकी पत्नी ने बच्चों को स्नेह से निहारा और धीरे-धीरे अपनी चम्मचों को मुँह की ओर उठाया।

"पिता जी यह तो मज़ेदार है।"

"सच? बहुत है, इसलिए जितना चाहो, खा सकते हो।"

"मैंने, इससे मज़ेदार खाना कभी नहीं खाया!"

"माँ, मेरा कटोरा फिर भर दो।"

"तुम्हारे पिता ने इन खुम्बियों को घर लाने में बहुत मेहनत की है। इसलिए सारा सूप ख़त्म करना होगा।" माँ ने कहा।

हँसते और बातचीत करते हुए परिवार ने खुम्बी-सूप के कई कटोरे समाप्त कर दिए। सातों बच्चे अपने चेहरों पर संतोष भरी मुस्कान लिए फ़र्श पर बिछी चटाई पर लेट गए।

दानकिची बड़ी हैरानी से खड़ा चुपचाप देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसी प्रतिक्रिया की उम्मीद करे। वह पिता के चेहरे को ग़ौर से देख रहा था। जब किसान मुस्कुराहट भरी नज़रों से अपने बच्चों को देख रहा था तो उसकी आँखें भर आईं और एक बड़ा-सा आँसू गाल पर से लुढ़ककर सूप के ख़ाली कटोरे में गिर पड़ा।

फिर एकाएक

"आहा, हा, हा! हा हा, हा, हा!

हा, हा, हा, हाहा......!"

कमरा जल्दी ही हँसी की आवाज़ों से भर गया लेकिन वे आवाज़ें इन्सानी नहीं लग रही थीं। पिता पेट पकड़कर हँस रहा था। एक पल बाद उसकी पत्नी और बच्चे भी अविश्वनीय हँसी से लोट-पोट होने लगे।

"हा, हाहा...., हा, हा .. आ.. हा, हा, हा!

हा, हाहा..... ओहा, हा.... हा... हा, हा!"

हँसी को न रोक पाते हुए पेट पकड़कर और मुँह फाड़े वे फ़र्श पर लुढ़कने लगे। इधर-उधर ठोकरें खाते हुए दीवारों से टकराते हुए, वे और ज़ोर से हँसने लगे, उनके चेहरे मुड़-तुड़कर अजीबोग़रीब आकृतियों में बदल गए थे।

उसके बाद जो कुछ हुआ, वह इतना भयावह था कि बाद में उस दृश्य की याद मात्र से ही दानकिची के शरीर के रोंगटे खड़े हो गए। उसके दिल में सिहरन-सी घर कर गई।

सभी आवाज़ें हँसी से विलाप में बदल गईं, उनके चेहरे - सुन्दर, छोटे-छोटे मासूम चेहरे नीले होने लगे। फिर मुँह से ख़ून-भरी झाग फेंकते हुए वे फ़र्श पर धराशाई हो गए और उनके हाथ-पैर काँपने

लगे। वे वहीं मर गए और उन्हीं के साथ मर गई उनकी हँसी।

दानकिची वहीं खड़ा रहा, आँखें फाड़-फाड़कर यह सब देखता रहा। उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया और शरीर काँपने लगा। जब वह हिलने-डुलने लायक हुआ तो खिड़की से पीछे हटा और जितनी तेज़ी से हो सकता था, मारुति पर्वत की ओर भाग निकला।

'ओह, कौन सोच सकता था..... विश्वास नहीं होता! सभी मर गए, वे प्यारे-प्यारे छोटे बच्चे भी... आह, लेकिन इस भीषण सूखे की चपेट में आकर तिल-तिलकर दर्द-भरे तरीक़े से मरने से तो जितनी जल्दी हो, सभी का एक साथ मरना बेहतर है जैसे कि इस किसान के परिवार ने किया। कम-से-कम आख़िरी समय तो वे भरपेट खा सके।

... हाँ, हाँ इसी तरह तो....नहीं, यह नहीं हो सकता। भोले-भाले बच्चों को खुश करना और फिर उन्हें मार देना, यह पाप है, जिसे सिर्फ़ शैतान ही कर सकता है.... ओह, लेकिन क्या यह उससे बेहतर नहीं है कि माँ-बाप को अपने बच्चों को एक-एक करके मरता हुआ देखना पड़े या माँ-बाप मर जाएँ और बेचारे छोटे बच्चों को छोड़ जाएँ, अकेले भूख से तड़पकर मर जाने को? मैं तो ऐसी त्रासदी के बारे में सोच भी नहीं सकता। मैंने पहले कभी इन भयावह बातों के बारे में जैसे कि अपनी जान ले लेना, या इससे भी ख़राब, अपने ही बच्चों को मार देना, सोचा तक नहीं... ओह, लोग कुछ बहुत ही घिनौनी बातें करते हैं।'

चेहरे पर घोर निराशा की भावनाओं की मूरत तराशे हुए दानकिची पहाड़ों की ओर भाग निकला। एकाएक वह रुका, उसने दाएँ-बाएँ देखा और तेज़ी-से एक छोटी पगडंडी की ओर घूम गया। नदी के किनारे कूदते-फाँदते हुए, उसने कई ज़हरीली, सुर्ख लाल रंग की खुम्बियाँ तोड़ीं और उन्हें पास के एक पेड़ की खोह में छिपा दिया।

'मैंने उन ज़हरीली खुम्बियों के गुच्छे को तोड़कर उस पेड़ की खोह में छिपा दिया है, क्यों नहीं....' बन्दरों के मुखिया दानकिची ने पहाड़ों और



नीचे घाटी में गिरती हुई बर्फ़ को देखते हुए साँस भरी।

गुफा के द्वार पर अपनी स्वाभाविक स्वाभिमान-मुद्रा में बैठे हुए दानकिची ने ध्यान रखा कि बन्दर अपने मुखिया के भीतर चल रहे असमंजस को भाँपने में सफल न हो पाएँ।

"सरदार", कोई चिल्लाया। दानकिची मुड़ा और देखा कि गोन्ता जो युवा बन्दरों में सबसे शक्तिशाली था, गुफा में उसके पीछे खड़ा था।

"क्या है, गोन्ता? लगता है तुम किसी उलझन में हो। आओ, बैठो और मुझे बतलाओ कि तुम्हारे मन में क्या है?" युवा बन्दर की लाल-सुर्ख आँखों और गम्भीर हाव-भाव से दानकिची को अपने शरीर में सिहरन-सी दौड़ जाने का अहसास हुआ लेकिन फिर भी वह सख़्त लेकिन स्वाभाविक लहज़े में बोल सकने में सफल हो सका।

गोन्ता की आवाज़ खिंची हुई थी तथा भिंचे हुए दाँतों से आ रही थी, "सरदार, हम सब यह और सहन नहीं कर सकते..... हम चाहते हैं कि आप एक बैठक बुलाएँ, ताकि हम सब मशविरा कर सकें कि क्या किया जाना चाहिए?"

'चलो, अब वक़्त आ गया है', दानकिची ने सोचा और कहा, "ठीक है, सिर्फ़ तुम्हारी आँखें ही निराशा से नहीं भरी हैं, मैंने इस गुफा में सभी जवान बन्दरों की आँखों में यही भाव देखा है। तुम्हारी इन आँखों के सवालों के जवाब देने का वक़्त भी आ गया है। क़बीले के छोटे सदस्यों को बोलने की इजाज़त नहीं है, लेकिन वे बैठकर सुन सकते हैं।"

जब दानकिची हल्के स्वर में ये बातें कह रहा था, चिन्ता का एक वातावरण चुपचाप गुफा में फैल रहा था।

बन्दरिया माँओं ने अपने पतले-सिकुड़े शिशुओं को अपनी छातियों से चिपका लिया था और बच्चों को अपने आगे गुफा के अन्त में ठेल दिया था। फिर बूढ़े बन्दरों ने अंगड़ाइयाँ लीं और धीरे-धीरे उन कोनों से निकले, जहाँ वे गुफा में लेटे हुए थे और क़बीले के नेता उन युवा बन्दरों से परे हट गए, जो उनकी खाल में से जुएँ निकाल रहे थे। गिरते-पड़ते थके-हारे शरीरों को गुफा के द्वार की ओर ले गए। हर चेहरे से यह अहसास झलक रहा था कि यह विचार-विमर्श कितना गम्भीर है। गम्भीर चेहरों के बीच सिर्फ़ आँखों की चमक शेष थी।

"अब मेरा ख़्याल है कि आप सब यह तो जानते ही हैं कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं। लू और सूखे से भरी ग्रीष्म तथा पतझड़ के बाद इस सर्दी के मौसम में हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं है। जैसा कि आपको मालूम ही है आड़ू और अखरोट के पेड़ों ने बिना फल दिए ही पत्तियाँ गिरा दीं। नीचे घाटी में खेत और बाग़ सभी सूख गए हैं। वहाँ रहने वाले लोग कभी के मर चुके हैं। यह एक ऐसा माहौल है जिसे हमने पहले कभी महसूस नहीं किया है। किसी तरह इधर-उधर से बटोरकर हमने अब तक ज़िन्दा रह सकने का भोजन जुटाया है, लेकिन अब लगता है कि यह बर्फ़ तो निरन्तर गिरती ही रहेगी। अगर ऐसा ही है तो क्या हमारा विवेक हमें कोई राह नहीं सुझा सकता?"

दानकिची की बात समाप्त होने से पहले ही गोन्ता उठकर खड़ा हो गया। अपने कन्धों को पीछे झटका देकर उसने लम्बी साँस भरी और अपनी घनी भौंहों को तेज़ी से ऊपर-नीचे करते हुए बोला- "कबीले के हम युवा सदस्यों ने फ़ैसला किया है कि मारुति पर्वत की नस्ल बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। भविष्य में भी हमारी नस्लों के लिए यह ज़रूरी है कि शक्तिशाली बने रहें और कमज़ोर ख़त्म हो जाएँ। यह तो साफ़ ही है, क्यों? अगर हम बूढ़ों और बच्चों पर भोजन बर्बाद करना बन्द कर दें तो जो ताक़तवर हैं वे शायद ज़्यादा देर ज़िन्दा रह सकें।"

"की इइइ ....!" एक बूढ़े बन्दर की तीखी आवाज़ गूँजी जो अपनी सूखी टहनी जैसी पतली बाँहें इधर-उधर पटक रहा था।

"चुप! तुम नौजवानों को यहाँ बोलने का अधिकार नहीं!"

"क्या?" एक युवा बन्दर कूदकर उठा और चेहरे पर धमकाने वाला भाव लाते हुए बुज़ुर्ग बन्दर के सामने खड़ा हो गया।

"बन्द करो काफ़ी हो गया", दानकिची ने हुक्म



दिया, "हमें जो चाहिए वह है विचार, हिंसा नहीं। हम अपने नौजवान साथियों को बोलने की इजाज़त देंगे। ठीक है, गोन्ता। अपनी बात को यहाँ सबके सामने खुलकर कहो।"

"बात यूँ है कि हम सबके भूख से मर जाने के बदले, ऊँह, देखिए न .... ताकि चुनिन्दा जवान और ताक़तवर सदस्य जो कबीले के लिए ज़्यादा ज़रूरी हैं - उनके एक दिन भी ज़्यादा ज़िन्दा रहने के लिए हमें कमज़ोरों को छोड़ देना होगा..."

"बेवकूफ़ नौजवान, मेरा ख़्याल है बोलने की इजाज़त दिए जाने पर तुम्हें इस तरह की बातें कहते हुए कुछ विशेष मज़ा आ रहा होगा।" गुस्से से भिंची मुठ्ठी को हिलाते हुए एक बुज़ुर्ग चिल्लाया।

दानकिची ने एक बार फिर तेज़-मिज़ाज बन्दरों को शान्त किया और कहा, "तो क्या तुम यह कह रहे हो कि अगर हम भोजन ढूँढ भी लें तो भी हम उसे कमज़ोर बन्दरों को न दें और उन्हें अपनी आँखों के सामने मर जाने दें?"

"ऊँह..., ख़ैर..."

"यह मारुति पर्वत के कानून के ख़िलाफ़ है। यह ग़ैरकानूनी !" एक और बुज़ुर्ग ने फटी हुई आवाज़ में कहा।

एक बार फिर विरोध की चिल्ल-पों को चुप कराने के लिए दानकिची को बोलना पड़ा, "यह वक़्त कानून और नियमों पर बहस करने का नहीं है। अगर हमें कमज़ोरों को निगल भी जाना पड़े तो यह भी मंजूर है लेकिन ताक़तवर और बेहतर बन्दरों को ज़िन्दा रखना आवश्यक है, नहीं तो मारुति पर्वत की नस्ल का अन्त हमारे वंश के साथ ही हो जाएगा।"

"यह वंश वग़ैरह की बात क्या है? इसे क्यों हर क़ीमत पर बनाए रखना चाहिए? हाँ, ये लौंडे-लपाड़े जो कह रहे हैं वह यह है कि उन्हें ज़िन्दा रहना चाहिए, दूसरे रहें या न रहें, हुँह!"

गुफा में गड़बड़ी का माहौल बनने लगा। भूख और निराशा से भरी आँखें दूसरी आँखों पर लगी थीं और बन्दर उस झगड़े का इन्तज़ार कर रहे थे, जिसमें फ़ैसला ताक़तवरों के हक़ में होना था।

दानकिची आँखें आधी बन्द किए गुफा के बाहर देख रहा था और खुद बड़बड़ा रहा था, "अगर झगड़ा शुरू हो गया तो कमज़ोर मारे जाएँगे और उनका माँस सुखा दिया जाएगा। यह तो 'बन्दर का सूखा माँस' जैसी पुरानी कहावत ही होगी। एक बार इन भूखे बन्दरों के मुँह इस माँस का स्वाद लग गया तो वे इस स्वाद को कभी नहीं भूलेंगे। साथ ही खाए गए बन्दरों के परिवार दूसरों के प्रति हमेशा के लिए द्वेष-भाव सँजोए रखेंगे और झगड़ा कभी ख़त्म नहीं होगा। और यह मारा-मारी तब तक जारी रहेगी जब तक कि एक भी बन्दर न बचे और वही अन्त होगा हमारे क़बीले का। आह, मैं मारुति पर्वत और अपने क़बीले को इस प्रकार समाप्त होता नहीं देख सकता। इसे देखने से तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

बर्फ़ गिरती रही, ... तेज़ और तेज़, उस पर्वत को ढकती हुई, जिस पर दानकिची ने काफ़ी लम्बे समय तक राज किया था।

'ज़हरीली, हँसीवाली खुम्बियाँ! हाँ, वही करूँगा। मैं उस पेड़ की खोह में छिपाकर रखी हुई उन खुम्बियों को ले आऊँगा ताकि हर कोई इन्हें भरपेट खाकर हँसते-हँसते मर सके। उनके द्वारा एक दूसरे को क़त्ल कर देने से तो यह बेहतर है।'

जब वह यह सोच रहा था तो उन सात बच्चों की तस्वीरें, जो नीले पड़ गए और फूल गए चेहरों के साथ मर गए थे, उसकी आँखों के सामने उभर आईं।

'ओह, यह नहीं चलेगा। बिल्कुल नहीं। सभी को मार देना, भोले-भाले शिशु बन्दरों तक को भी। यह तो बहुत ही बुरा होगा। मैं यह नहीं कर पाऊँगा। हम कोई इन्सानों की तरह नहीं हैं।'

बेचारे दानकिची को इतना दुख हुआ कि उसके गले से दर्द की एक चीख निकल गई।

"क्यों नहीं आता वसन्त इस वर्ष !!"

गुफा के अन्दर सब कुछ निस्तब्ध एवं शान्त था।

"माँ, कहाँ से आता है वसन्त?" गुफा के पिछले हिस्से में माँ की छाती से चिपके एक नन्हें बन्दर की तोतली आवाज़ फूटी।



गुफा के अन्दर का तनावपूर्ण वातावरण एकाएक शिथिल पड़ गया और सभी बन्दर चटर-पटर करने लगे।

"वसन्त आता है एक ऐसी जगह से, जो यहाँ से दूर, बहुत दूर है"... छोटे बन्दर की माँ ने जवाब दिया।

"बहुत दूर वाली जगह कहाँ है?"

"वह बर्फ़ से ढके सफ़ेद पहाड़ के दूसरी तरफ है। पहाड़ के दूसरी ओर वसन्त ज़रूर पहुँच चुका है। वहाँ बर्फ़ पिघल चुकी है और हो सकता है फूल भी खिल चुके हों।"

दानकिची को अपने अन्दर एक गर्माहट-सी महसूस हुई। 'आह, हालात चाहे जितने भी ख़राब हों, इन छोटे-छोटे बन्दरों में ज़िन्दा रहने की भावना कितनी प्रबल है? मैं कभी भी उनकी जान नहीं ले सकता, जो हर मुसीबत में ज़िन्दा रहने की कोशिश करते हैं। उन्हें ज़िन्दा ही रहने दिया जाना चाहिए। उन्हें ज़िन्दा ही रहना...'

"वसन्त इस साल किसी-न-किसी वक़्त तो आएगा ही न? लेकिन माँ मैं अब और इन्तज़ार नहीं कर सकता। अगर वसन्त हमारे पास नहीं आता तो चलो हम सब मिलकर उसे ढूँढें।"

"यह छुटकू कैसी पागलपन की बातें करता है!" एक बुज़ुर्ग ने झुँझलाकर कहा - "मैंने जाकर वसन्त को ढूँढने की बात कभी नहीं सुनी। पुराने ज़माने से ही हमने मारुति पर्वत पर ही वसन्त का इन्तज़ार किया है और वह अवश्य आता है। समझे बेटे! हम तो सिर्फ़ इन्तज़ार ही कर सकते हैं।"

"क्यों? अगर वसन्त हमारे पास नहीं आता तो हमें उससे मिलने जाना चाहिए। मैं जा रहा हूँ। मैं वसन्त की अगुवाई करने पहाड़ के नीचे जाऊँगा।"

"इस पहाड़ से नीचे जाओगे", दानकिची आश्चर्य से उछल पड़ा। "अगर हम मारुति पर्वत छोड़ दें तो हमारा सब कुछ छिन नहीं जाएगा? क्या मैं इतना सुन्दर पहाड़ गँवा दूँ जहाँ मैंने इतने समय तक राज किया है! कभी नहीं।"

फिर दानकिची की नज़रों के ठीक सामने, जिस छोटे-से बन्दर ने यह सब कहा था, वह अपनी माँ की बाँहों से निकलकर गुफा के फ़र्श पर कूदता हुआ गुफा के द्वार की ओर चल पड़ा। उसकी देखा-देखी दूसरे छोटे बन्दर भी उसके पीछे हो लिए। वे बाहर भागकर उस दूसरे वाले पहाड़ की ओर चलने लगे, जिसकी ओर बन्दर की माँ ने इशारा किया था। उनके छोटे-छोटे पाँव पहाड़ को ढकने वाली बर्फ़ में धँसे जा रहे थे। उनके ठीक पीछे उनकी माताएँ उन्हें पकड़ने की लिए दौड़ रहीं थी।

दानकिची भावशून्य चेहरे से यह सब देखता रहा और फिर एकाएक गोल-गोल घूमा और गुफा में उपस्थित सभी बन्दरों से चिल्लाकर बोला, "ठीक है, चलो, हम सब, पहाड़ से नीचे चलें। हम वसन्त से मिलने जाएँगे। सबसे पहले हमें वह अगला पहाड़ पार करना होगा।"

जल्दी ही सभी बन्दर गुफा के पीछे खड़े थे, उसके बाद थे, क़बीले के नेता और यहाँ तक कि बड़े-बुज़ुर्ग भी उस समूह में शामिल हो गए थे।

जैसे ही उसने निश्चित कर लिया कि आख़िरी बन्दर भी गुफा से बाहर निकल गया था, दानकिची क़बीले के सामने से भागता हुआ आकर समूह के आगे अपने स्थान पर पहुँच गया और गहरी बर्फ़ को तेज़ी से खोदता हुआ अपना रास्ता बनाने लगा।

दानकिची और उसके क़बीले के बन्दर घाटी में से गुज़रे। फिर एक जमी हुई नदी पार की और तुषार भरे एक जंगल में चलते रहे।

जल्दी ही बन्दरों की कतार फैलने लगी, लेकिन तब ताक़तवर युवा बन्दरों ने थकी माताओं की बाँहों से शिशु बन्दरों को ले लिया और उन्हें अपनी पीठ पर ले चले तथा डगमगाते बूढ़े बन्दरों के हाथ पकड़कर उन्हें चलने में मदद करने लगे।

तब भी अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता कि क़बीले को रास्ते में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और थकान से चूर होकर कितने बन्दर बर्फ़ में ढेर हो गए। लेकिन फिर भी क़बीला बिना रुके चलता ही रहा, बिना एक बार भी पीछे देखे, आगे-ही-आगे, वसन्त की ओर, नवजीवन की ओर...

इस सबमें कितना वक़्त लगा? कुछ को लगा कि यह सिलसिला चलता ही रहेगा, कुछ के लिए



समय का अर्थ ही नहीं रह गया था।

तभी अचानक एक दिन, एक शिशु बन्दर खुशी से चिहुँक उठा, "लो देखो, मैं उस सामने वाले पहाड़ पर एक साफ़ जगह देख सकता हूँ लगता है वहाँ बर्फ़ नहीं है। और, ओह, हवा में कैसी ख़ुशबू तिरती आ रही है!"

यह सुनते ही दानकिची को एकाएक लगा कि उसका शरीर निढाल-सा हो गया है - "आहा, यह तो ज़रूर वसन्त की बयार है।"

अपने गाल पर कोमल, मृदु बयार का अनुभव करते हुए दानकिची ने, जिसने गहरी बर्फ़ को काटकर राह बनाते हुए दिन-रात अपने क़बीले की अगुवाई की थी, महसूस किया कि उसकी ताक़त जवाब दे रही है, उसके घुटने झुकने लगे और वह बर्फ़ पर गिर पड़ा।

"यही वसन्त है! वसन्त है!"

"अरे हम वसन्त तक आ पहुँचे हैं!"

छोटे बन्दरों की आवाज़ें खुशी से गूँजने लगीं और बाक़ी बन्दर गिरते-पड़ते दानकिची की पीठ के ऊपर से कूदकर भागे। युवा और बूढ़े सभी बन्दर अपने नेता के ऊपर से कूदकर भागे, जहाँ तक उनकी थकी हुई टाँगें उन्हें ले जा सकती थीं।

बर्फ़ में अकेले रह जाने पर भी दानकिची ने खुशी से किलकारी भरी। छोटे-छोटे बन्दरों की खुशियों से भरी आवाज़ें सुनकर उसने कल्पना की फूलों से भरी वसन्त ऋतु की क्यारियों की - जिनमें छोटे-छोटे बन्दर कूदते-फाँदते फिर रहे थे।

"जिओ, ताक़तवर और स्वस्थ छोटे बन्दरों...." धीरे से ये शब्द बुदबुदाते हुए वहीं दानकिची ने आख़िरी साँस ली और हमेशा के लिए चुप हो गया।

अगर वसन्त हम तक नहीं आता तो हमें ही उसके पास जाना चाहिए। ●

साहित्य अकादमी के सौजन्य से 'अचरज ग्रह की दन्तकथा' से साभार।

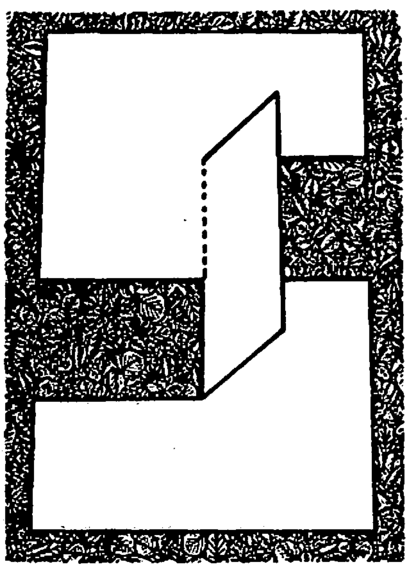
सभी चित्र : हूताराम अधिकारी



माथापच्ची

(1)

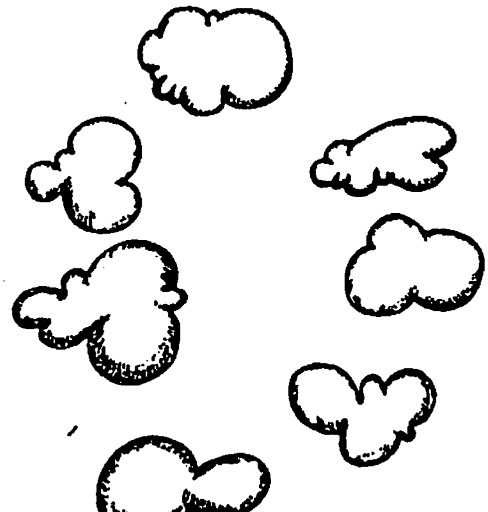
यह काग़ज़ी पहेली काग़ज़ के एक ही सपाट टुकड़े से बनी है। चित्र में दिख रहा ऊपर की ओर उठा हुआ हिस्सा भी इसी काग़ज़ के टुकड़े का एक हिस्सा है। इस हिस्से का क्षेत्रफल काग़ज़ में बने दोनों कटों के क्षेत्रफल के जोड़ के बराबर है। पर यह हिस्सा काग़ज़ से काटकर निकालकर फिर उसमें चिपकाया नहीं गया है। उसमें वैसा–का–वैसा बना है। फिर यह चित्र कैसे सम्भव हुआ? यही तो मजेदार बात है कि तुम भी चाहो तो कोशिश करके एक साधारण काग़ज़ के टुकड़े से इस तरह का अजूबा बना सकते हो। कोशिश करो।



(2)

क्या तुम कोई एक अंक (1,2,3,4,5,6,7,8,9 या 0) का तीन बार इस्तेमाल करके और गणितीय संकेतों की मदद लेकर एक ऐसा समीकरण लिख सकते हो जिसका मान 30 हो?

(3)



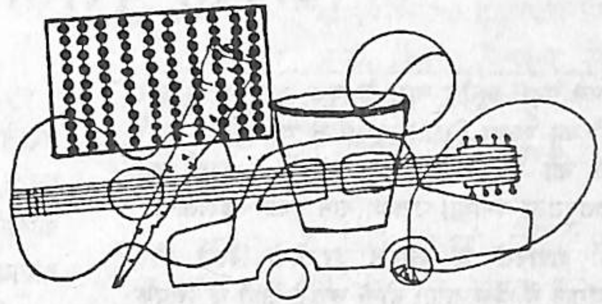
ये साधारण से बादल हैं, आसमान में तैरते हुए, जिनके बारे में गर्मियों में सोचना बहुत सुहाना लगता है। पर ये बादल इतने साधारण भी नहीं हैं। इनमें कुछ ख़ासियत है जिसे अगर तुम ढूँढ निकालो तो इन्हें एक से सात तक नम्बर दे सकते हो। तो, हो न तैयार?

(4)

तुम कभी नदी में नहाने गए हो? मैंने एक बात पर गौर किया है कि जब भी मैं नदी नहाने जाती हूँ तो कितने ही कसकर जूड़ा बनाऊँ, पानी में डुबकी लगाते ही वह खुल जाता है। मैंने अपने बालों में तरह–तरह की गाँठ लगाकर आज़माया पर हर बार वह पानी में पहुँचते ही खुल जाते। सिर्फ़ जब रबर–बैण्ड या रिबिन बाँधू, तभी बँधे रहते हैं बाल। भला क्यों होता है ऐसा? सोचकर बताओ।

(5)

इस चित्र में सात चीज़ें एक के ऊपर एक गड्डमड्ड हो गई हैं। मज़ेदार बात यह है कि सातों का नाम 'ग' से शुरू होता है। क्या तुम इन सात चीज़ों को ढूँढ पाए? ज़रा इनके नाम तो बताओ।



वर्ग पहेली –70

1	■	2		3	■	4	5	
6			■	7		■		■
	■		■		■	8		9
■	10	■	11		12	■	■	
13				■	14		15	
	■	■	16	17		■		■
18	19		■		■	20	■	21
■		■	22		■	23		
24			■	25			■	

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. चिड़ियाघर के जंगली जानवर इसमें रहते हैं (3)
4. टोकरी में दाल, सांभर, सब्ज़ी रखने का पात्र (3)
6. चकमक की एक रचनाकार का नाम (3)
7. इच्छा भी और विवेक भी (2)
8. अम्मु की दरी की उलटफेर में छात्र है (3)
11. दोस्ती भी और बीच भी (3)
13. अब फसल में जीत नहीं (4)
14. तीतर की बहन में उपाय (4)
16. सरगना में चतुर है (3)
18. नवजात में है जंगल की पैदाइश (3)
22. फन्दा (2)
23. अचानक मरा में घर का एक हिस्सा (3)
24. निगाह (3)
25. साफा और इज़्ज़त भी (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. उद्यान (3)
2. रूई धुननेवाला (3)
3. राम के जीवन की कहानी पर खेला जाने वाला नाटक (4)
5. कटोरी तो है, पर बहुत बड़ी और अक्सर बेंत की बनी (3)
9. बोलने में स्वरों पर दिया जाने वाला ज़ोर (3)
10. और नहीं, —— (2)
11. खुश होना या कली से फूल बनना (3)
12. लत रहे न रहे, बेल तो है (3)
13. थोड़ी-सी अक्ल और आधा उल्टा वलवला, बनता है आग (3)
15. दलदल (2)
17. बातचीत (4)
19. जो दिन में पाँच वक्त पढ़ी जाती है (3)
20. जालों की रानी है एक अहम कड़ी (3)
21. आम और राम से मिलेगी राहत (3)

सुचेता कांजीलाल व नम्रता हरीशंकर, चौथी, दिल्ली द्वारा भेजी गई पहेली पर आधारित।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस वर्ग पहेली का हल छपेगा। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली – 70 का हल जुलाई, 1997 के अंक में देखें।

क़िस्सा बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। दोनों उससे सोने के सिक्के हथियाना चाहते थे। लेकिन जब वे अपनी चाल में असफल हुए तो पुलिस को ख़बर कर दी। पुलिस के जासूस कुत्ते बुरातीनो को पकड़कर ले गए और फिर उसे नगर के बाहर एक गन्दे तालाब में फेंक दिया।

तालाब के नन्हे-नन्हे जलकीट उसे परेशान करने लगे। तालाब के कूबर कछुए ने उसे उनसे बचाया। बूढ़ा कछुआ तालाब की तली में गया और बुरातीनो के लिए एक कीमती चाबी लेकर आया। और उसे मूरखनगरी से भाग जाने को कहा। बुरातीनो रास्ता नहीं जानता था। सो उसे जिधर रास्ता सूझा, भाग चला। रास्ते में उसे एक पुराना साथी पियेरो मिला। अब आगे पढ़ो ...

पियेरो ने आपबीती सुनाई

उसने पुनः पियेरो को छुईमुई की झाड़ी के नीचे छिप जाने के लिए बाध्य किया। बुरातीनो ने अस्पष्ट स्वर में कहा - उसके मुँह में टोपी जो ठुँसी हुई थी, "आगे फुनाओ, आगे...."

"हाँ, तो एक बार रात में ख़ूब तेज़ आँधी चल रही थी...."

"यह तुम फुना चुके हो....."

"हाँ, तो फिर," पियेरो ने बात आगे बढ़ाई, "जानते हो मैं अभी सोया नहीं था कि अचानक किसी ने खिड़की खटखटाई...."

"सिनियोर काराबास बाराबास बड़बड़ाने लगा, 'ऐसे ख़राब मौसम में कौन यहाँ आ टपका?'

'जी, मैं हूँ - जोंकमार,' खिड़की के पीछे से आवाज़ आई। 'इलाज के लिए जोंकें बेचनेवाला। मेहरबानी करके मुझे आग के क़रीब बैठ लेने दीजिए, कपड़े सूख जाएँगे।'

"ये जोंकें बेचनेवाले क्या बला होते हैं, यह देखने के लिए मेरा जी मचल उठा। मैंने धीरे से परदा खिसकाया और कमरे में सिर निकालकर झाँकने लगा। देखता क्या हूँ : सिनियोर काराबास बाराबास कुर्सी से उठा, हमेशा की तरह उसका पैर उसकी लम्बी दाढ़ी पर पड़ा, फिर उसने गुस्से से गालियाँ देते हुए दरवाज़ा खोला।"



"पानी से तर-ब-तर लम्बे क़द का, सूखे कुकुरमुत्ते की तरह झुर्रीदार छोटे-से चेहरेवाला आदमी कमरे के भीतर दाख़िल हुआ। वह हरे रंग का पुराना ओवरकोट पहने हुए था। कमरबन्द से चिमटियाँ, लोहे की कँटिया और ख़ास तरह की सुइयाँ लटक रही थीं। हाथ में उसने टीन का एक डिब्बा और जाल थाम रखा था।"

'अगर आपके पेट में दर्द हो,' उसने झुककर अदब से अभिवादन करते हुए कहा, और झुककर दोहरा हो गया, मानो पीठ ही बीच से टूट गई हो, 'अगर भयानक सिर दर्द हो या कान के भीतर धड़-धड़ होती हो तो मैं आधा दर्ज़न बेहतरीन जोंकों को चिपकाकर आपकी सेवा कर सकता हूँ।'

"सिनियोर काराबास बाराबास बड़बड़ाया : 'जहन्नुम में जाए, कोई जोंक-वोंक नहीं! हाँ, जितनी देर चाहो आग ताप सकते हो।'

'जोंकमार ने आग की तरफ पीठ कर ली। तुरन्त ही उसके हरे ओवरकोट से भाप उड़ने लगी और काई की दुर्गन्ध फैलने लगी।'

'आजकल जोंक का धन्धा ख़राब चल रहा है', वह बोला। 'थोड़ा खाने-पीने का इन्तज़ाम हो जाए तो मैं अपनी सबसे अच्छी क़िस्म की एक दर्जन जोंकें आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकता हूँ, आपकी जाँघ में उन्हें चिपका सकता हूँ, अगर हड्डियों में टूटन हो रही हो.....'

'जहन्नुम मैं जाएँ तुम्हारी जोंकें! जोंक-वोंक नहीं! हाँ, खाने-पीने को मिल सकता है,' काराबास बाराबास चिल्लाया।"

"जोंकमार खाना खाने लगा, उसका चेहरा रबर की तरह सिकुड़ता और फैलता था। खाने-पीने के बाद उसने चुटकी भर तम्बाकू माँगी।"

'सिनियोर, मैंने भरपेट खाना खा लिया है और आग ताप ली है,' वह बोला। 'आपकी ख़ातिरदारी की क़ीमत चुकाई जा सके, इसलिए मैं एक भेद आपके



सामने खोल रहा हूँ।'

"सिनियोर काराबास बाराबास ने पाइप के कश खींचे और बोला : 'दुनिया में बस एक भेद है जो मैं जानना चाहता हूँ। इसके अलावा बाक़ी सब पर मैं थूकता और छींकता हूँ!'

'सिनियोर,' जोंकमार ने फिर कहा, 'मैं एक बहुत बड़ा भेद जानता हूँ, कछुए कूबर ने मुझे यह भेद बतलाया है।'

"यह सुनते ही काराबास बाराबास आँखें फाड़कर देखने लगा, उठ खड़ा हुआ, अपनी दाढ़ी में ज़रा उलझा, भयभीत जोंकमार पर सीधे कूद पड़ा, उसे अपनी तोंद से चिपकाकर साँड़ की तरह दहाड़ा : 'दरियादिल जोंकमार, प्यारे जोंकमार, झटपट कहो, तुम्हें कछुए कूबर ने क्या-क्या बतलाया था!'

"तब जोंकमार ने यह कहानी कह सुनाई : 'मैं मूरखनगरी के पास एक गन्दे तालाब में जोंकें पकड़ रहा था। चार सोल्दो रोज़ की मजूरी देकर मैंने एक ग़रीब आदमी को अपने साथ धन्धे पर लगा रखा था - वह कपड़े उतारकर गले तक पानी में उतर जाता और तालाब में तब तक खड़ा रहता, जब तक कि उसके नंगे शरीर में जोंकें न चिपक जातीं। उसके बाद वह पानी से निकलकर किनारे आ पहुँचता, मैं उसके शरीर में लिपटी एक-एक जोंक को छुड़ा-छुड़ाकर जमा करता और फिर उसे तालाब में वापस भेज देता।'

'इस तरह हमने बहुत सी जोंकें जमा कर लीं, अचानक पानी के भीतर से एक सर्पाकार जीव दिखलाई दिया।'

'सुनो, जोंकमार,' उसने कहा, 'तुम ने हमारे इस रमणीक तालाब के निवासियों का जीना हराम कर रखा है, तुम ने तालाब को घंघोल दिया है, नाश्ते के बाद मुझे चैन से आराम भी नहीं करने देते ... यह गड़बड़ी कब ख़त्म होगी?'

"मैंने देखा कि यह एक मामूली कछुआ है। बिना किसी भय के मैंने उत्तर दिया : 'जब तक इस गन्दे डबरे की सभी जोंकें नहीं पकड़ लूँगा...

'मैं तुम्हें मुआवज़ा दे दूँगा, तुम बस हमारे तालाब की ज़िन्दगी में ख़लल न डालो और फिर कभी इधर लौटकर न आओ।'

"तब मैं कछुए का मज़ाक उड़ाने लगा, 'अरे मूर्ख, बस, ख़ाली बक्से की तरह तैरनेवाला, तू भला मुझे क्या देगा? बस, अपनी हड़ीली खोपड़ी जिसमें अपना सिर-पैर छिपाए घूमता है ... मैंने तो तेरी यह खोपड़ी कंघी बनानेवाले को दे दी होती....' तब कछुआ क्रोध से तमतमाया और बोला, 'तालाब के तल पर जादुई चाबी पड़ी है .... मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जो इस चाबी को पाने के लिए ज़मीन-आसमान एक कर सकता है ....'

"जोंकमार अभी यह बात कह भी न पाया था कि काराबास बाराबास आवेश में गला फाड़ते हुए चीखने लगा : 'वह आदमी - मैं हूँ! मैं! मैं! भले आदमी, तो तूने कछुए से चाबी क्यों नहीं ले ली?'

'मुझे क्या पड़ी थी!' जोंकमार ने कहा और अपना झुर्रीदार चेहरा सिकोड़ लिया जैसे कोई सूखा हुआ कुकुरमुत्ता हो। 'यह भी ख़ूब रही! किसी मामूली चाबी से क़ीमती जोंकों की अदला-बदली कैसे की जा सकती है ... बस यह समझो, हम उस कछुए से झगड़ लिए और उसने पानी के ऊपर पंजा उठाकर कहा, 'मैं क़सम खाकर कहता हूँ - यह जादुई चाबी न तो तुम्हें मिलेगी, न किसी और को। मैं क़सम खाता हूँ - चाबी का हक़दार वही होगा जो तालाब के सभी निवासियों का दिल जीत ले और जिसके लिए वे मुझसे प्रार्थना करने लगें ....'

'अपना पंजा ऊपर उठाए कछुआ पानी में उतर गया।'

'मुझे तत्काल मूरखनगरी जाना होगा!' झटपट अपनी लम्बी दाढ़ी का छोर जेब में ठूँसते हुए, टोपी और लालटेन सँभालते हुए काराबास बाराबास ने कहा 'मैं तालाब के किनारे बैठ जाऊँगा। मधुर मुस्कान बिखेरता रहूँगा। मेंढकों, उनके बाल-बच्चों और जलकीटों की ख़ुशामद करूँगा, उन्हें राज़ी करूँगा ताकि वे सब मिलकर मेरे हक़ में कछुए से प्रार्थना करें ... मैं उन्हें पंद्रह लाख मोटी-मोटी चर्बीदार मक्खियों का तोहफ़ा दूँगा.... मैं वहाँ अकेली गाय की तरह रंभा-रंभाकर रोऊँगा, दुखियारी मुर्गी

की तरह आहें भरूँगा, घड़ियाल की तरह आँसू बहा-बहाकर रोऊँगा। मैं नन्हे-नन्हे मेंढकों के आगे घुटनों के बल खड़ा रहूँगा ... बस, चाबी हर हालत में मिलनी चाहिए! मैं नगर में जाऊँगा, एक घर में प्रवेश करूँगा, सीढ़ी के नीचेवाले कमरे में पहुँचकर ... मैं एक छोटे से दरवाज़े को खोज लूँगा, - उसके नज़दीक सभी आते-जाते हैं, पर किसी को इस रहस्य का पता नहीं चल पाता। बस, ताले में चाबी लगाकर ...'

"तो जानते हो, बुरातीनो, सब कुछ जान लेने के लिए मेरा जी तड़फड़ा उठा, मैं परदे के पीछे से बाहर निकल आया।" छुईमुई की झाड़ी तले सड़ी पत्तियों पर बैठा हुआ पियेरो यह क़िस्सा सुना रहा था।

"सिनियोर काराबास बाराबास ने मुझे देख लिया।'

'तू चुपके-चुपके सुन रहा था, बदमाश कहीं का!' और वह मुझ पर झपटा, ताकि मुझे पकड़कर आग में झोंक दे, लेकिन पैर तो दाढ़ी में उलझकर रह गए और भयानक दहाड़ के साथ उसने कुर्सी उलट दी, फिर ज़मीन पर भड़भड़ाकर चारों खाने चित्त हो गया।"

"मुझे याद नहीं, मैं कैसे खिड़की के बाहर पहुँचा, मैंने कैसे चहारदीवारी पार की। अन्धकार में हवा सायँ-सायँ कर रही थी और पानी भी झमाझम बरस रहा था।

"मेरे सिर के ऊपर बिजली कड़की, रोशनी फैली और दस क़दम की दूरी पर मैंने अपने पीछे काराबास बाराबास और जोंकमार को भागते हुए देखा ... मैंने सोचा : मारा गया! मुझे ठोकर लगी, किसी मुलायम और गरम चीज़ पर मैं गिर पड़ा, किसी के कान पकड़ में आ गए ..."

"यह भूरा ख़रगोश था। उसने भयभीत होकर ऊँची छलाँग मारी, लेकिन मैंने उसके कान मज़बूती



से पकड़ रखे थे और हम अँधेरे मैदानों, अंगूर के बागानों और खेतों से होकर सरपट भागते रहे।"

"जब ख़रगोश थककर बैठ जाता तो मैं उसे प्यार करता, "बस, थोड़ी कसर है, और ज़रा दौड़ ले, मेरे भूरे दोस्त ..."

"ख़रगोश ठण्डी साँस लेता और फिर हम लोग न जाने कहाँ-कहाँ हवा में उड़ने लगते - कभी दाहिने, तो कभी बाएँ ..."

"जब बादल छँट गए और चाँद निकल आया, मैंने पहाड़ के नीचे एक छोटी-सी नगरी देखी, जहाँ अधढहे मकान थे।"

"सड़क पर नगरी की ओर काराबास बाराबास और जोंकमार दौड़ रहे थे।"

"ख़रगोश ने कहा" 'आह, ऐसा है ख़रगोश का भाग्य! वे लोग मूरखनगरी की ओर जा रहे हैं पुलिस के कुत्ते किराये पर लेने। बस, तबाही सिर पर है!'

"ख़रगोश हिम्मत हार गया। उसने पंजों में नाक गड़ा ली और कान लटका लिए।"

"मैंने उसकी मिन्नतें कीं, रोया, यहाँ तक कि उसके पैरों पर भी गिर पड़ा। ख़रगोश चुप्पी साधे रहा।"

"लेकिन जब नगरी से दो नकचिप्पे बुलडॉग, जिनके दाएँ पैरों में काली पट्टी बँधी थी, झपटकर दौड़े, ख़रगोश भय से काँपने लगा, - मैं मुश्किल से उसकी पीठ पर सवार हो पाया और वह जंगल की ओर सरपट दौड़ चला ..."

"बाक़ी सब कुछ तुमने ख़ुद अपनी आँखों से देखा है, बुरातीनो।"

पियेरो ने अपनी बात ख़त्म की और बुरातीनो ने उससे सावधानी से पूछा "और हाँ, किस घर में, सीढ़ी के नीचेवाले किस कमरे में दरवाज़ा है, जो चाबी से खुलता है?"

"काराबास बाराबास इसके बारे में कुछ न बता पाया ... अरे, हमारे लिए सब एक जैसा है, चाबी झील के तल में है ... हमारी ऐसी क़िस्मत कहाँ ...."

"और तुमने इसे नहीं देखा?" बुरातीनो ने उसके कान में चहकते हुए कहा, फिर उसने जेब से चाबी निकाली, उसे पियेरो की नाक के आगे घुमाया, "यही है वह!"



(अगले अंक में जारी)
(सोने की चाबी - किस्सा बुरातीनो का से साभार)
(लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय
सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोशिकन)

रचनाकारों से .....

हम चकमक के पाठकों के साथ-साथ चकमक में लिखने वालों का समूह भी बढ़ाना चाहते हैं। चकमक के लिए हर माह कविताएँ, कहानियाँ तथा अन्य सामग्री चाहिए होती है।

अच्छी कहानियों तथा कविताओं की कमी हमेशा बनी रहती है - नाटक तो न के बराबर आते हैं। यदि आप चकमक के पाठक के साथ-साथ रचनाकार भी हैं तो चकमक के तेवर के अनुरूप अपनी रचनाएँ भेजें। प्रकाशन के लिए चुनी रचनाओं पर मानदेय की व्यवस्था है।

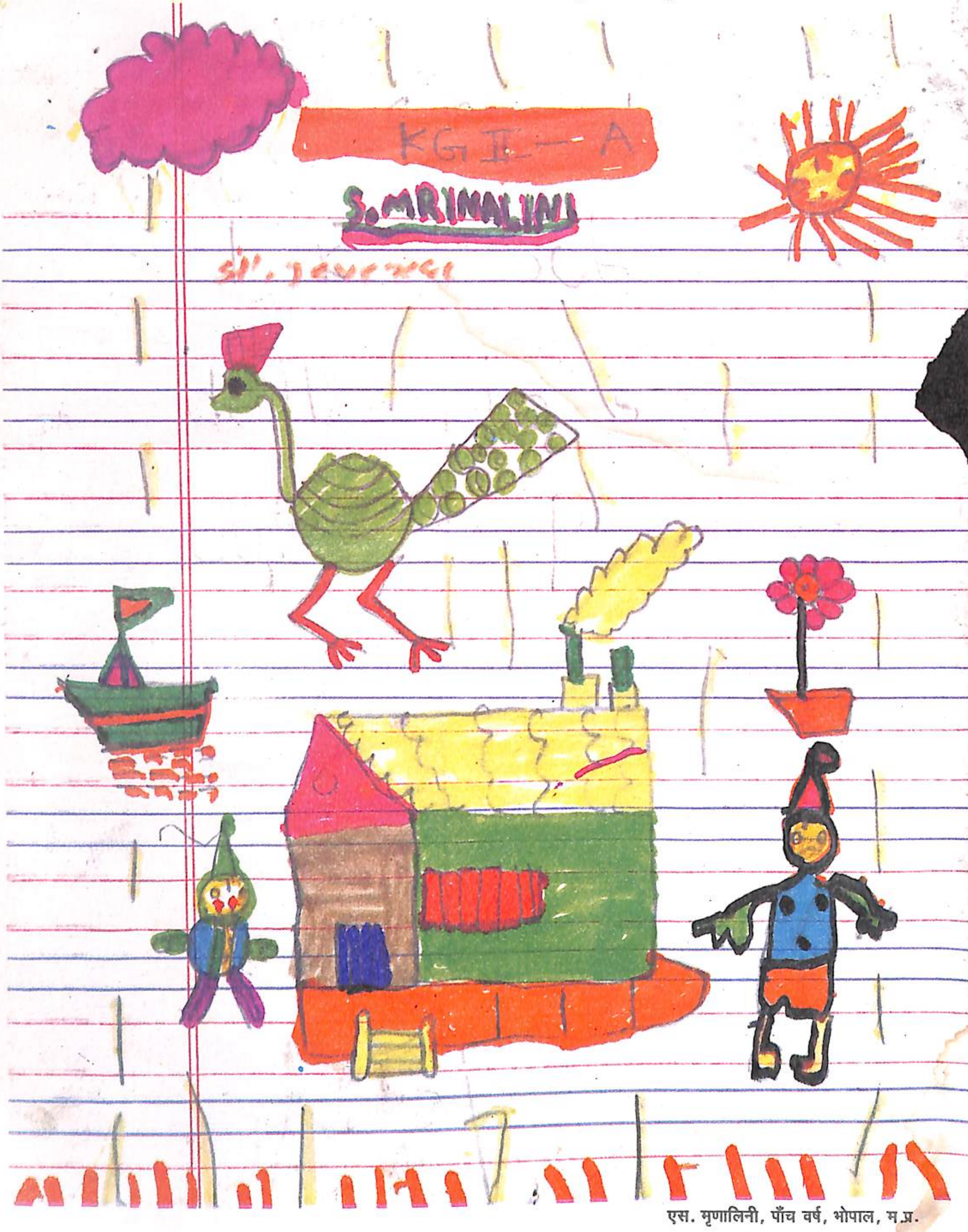


राजेश यादव



अर्जुन लाल उमरे, पाँचवीं, राजनांदगाँव, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97



एस. मृणालिनी, पाँच वर्ष, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना